सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन

पुलिस कर्मियों के लिए बाल संरक्षण पर मॉड्यूल

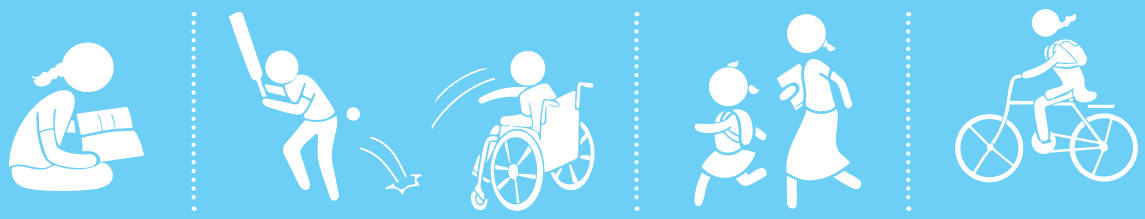

new concept
Centre for Development Communication

unicef
for every child

विषय–वस्तु

सत्र 1

ग़ैर–निर्णयात्मक व्यवहार और समानुभूति को समझना 9

सत्र 2

सक्रियता से सुनना एवं मौखिक और गैर–मौखिक संचार 17

सत्र 3

बच्चों के साथ बातचीत करते समय भेदभाव रहित व्यवहार अपनाना 21

सत्र 4

बच्चों के विकास को समझना और उनके व्यवहार परिवर्तन की जरूरतों को पहचानना 29

परिचय

यह मॉड्यूल खासतौर पर पुलिस कर्मियों (जैसे बाल कल्याण पुलिस अधिकारी, सहायक उप निरीक्षक, उप निरीक्षक, स्टेशन हाउस अधिकारी और कांस्टेबल/हेड कांस्टेबल) के लिए बनाया गया है। इसका उद्देश्य पुलिस अधिकारियों को बच्चों से जुड़ी विभिन्न कानूनी प्रक्रियाओं और उनके अधिकारों को समझने में मदद करना है। यह उन अधिकारियों के लिए उपयोगी है जो किशोर न्याय अधिनियम 2015, यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा अधिनियम 2009, बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006, बाल एवं किशोर श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम 1986 जैसे कानूनों को लागू करने में सीधे तौर पर जुड़े होते हैं। क्योंकि इन कानूनों के तहत वे बच्चों के संपर्क में आते हैं, इसलिए यह मॉड्यूल उन्हें सही तरीके से काम करने में सहायता करेगा।

मॉड्यूल को इस तरह तैयार किया गया है कि जब पुलिस अधिकारी देखभाल और सुरक्षा की जरूरत वाले बच्चों या किसी कानूनी समस्या में फंसे बच्चों से मिलें, तो वे उनके साथ सही तरीके से व्यवहार करें। इसका मुख्य उद्देश्य पुलिस कर्मियों के कौशल को बेहतर बनाना है ताकि वे बच्चों से अच्छे से संवाद कर सकें। इस मॉड्यूल को चार सत्रों में बांटा गया है:

- बिना किसी निर्णय के सोचना और दूसरों के प्रति समानुभूति रखना
- ध्यान से सुनना और बोलचाल व हाव–भाव के माध्यम से संवाद करना
- बच्चों से बातचीत करते समय भेदभाव न करना और समान व्यवहार करना
- बच्चों के विकास को समझना और उनके व्यवहार परिवर्तन की जरूरतों को पहचानना

सत्रों को एक ही मॉड्यूल के हिस्से के रूप में या चार अलग–अलग चरणों में संचालित किया जा सकता है। हर सत्र में केस स्टडी या गतिविधियाँ शामिल हैं, जिससे प्रशिक्षणार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। सत्र के अंत में, मुख्य सीखों को संक्षेप में बताया गया है ताकि उन्हें आसानी से समझा और याद रखा जा सके।

सत्र 1

ग़ैर–निर्णयात्मक व्यवहार और समानुभूति को समझना

सत्र के परिणाम

सत्र के अंत तक प्रतिभागीः

- ग़ैर–निर्णयात्मक व्यवहार के व्यावहारिक तरीक़ों को बता पाएंगे
- पुलिसिंग में समानुभूति की आवश्यकता समझा पाएंगे।

आवश्यक सामग्री

चार्ट पेपर, मार्कर, केस स्टडी प्रिंटआउट

अवधि

90 मिनट

प्रक्रिया

प्रतिभागियों को बताएँ कि हम गैर–निर्णयात्मक व्यवहार के बारे में समझेंगे। उनसे पूछें कि जब वे गैर–निर्णयात्मक होने के बारे में सोचते हैं, तो उनके दिमाग में क्या आता है। 2–3 उत्तर सुनने के बाद, यह जानकारी साझा करें:

गैर–निर्णयात्मक व्यवहार का मतलब है दूसरों के साथ बिना किसी पूर्वधारणा, पूर्वाग्रह या निर्णय के पेश आना। इसका मतलब है खुले दिमाग से, समझदारी और समानुभूति के साथ व्यवहार करना, और किसी व्यक्ति के चरित्र पर उंगली उठाने के बजाय, उनकी स्थिति और व्यवहार पर ध्यान देना।

प्रतिभागियों को बताएं कि हम कुछ परिदृश्यों के आधार पर छोटे समूहों में चर्चा करेंगे, ताकि वे गैर–निर्णयात्मक रवैये को व्यावहारिक रूप से और उनकी भूमिका के दृष्टिकोण से बेहतर समझ सकें।

गतिविधि- समूह चर्चा

- प्रतिभागियों को 4–5 लोगों के छोटे समूहों में बांटें।
- प्रत्येक समूह को नीचे दी गई स्थितियों में से एक परिस्थिति दें। समूह के सभी सदस्यों से उस परिदृश्य के बारे में सोचने और आपस में चर्चा करने के लिए कहें। उन्हें चर्चा के लिए 5–7 मिनट दें और फिर एक–एक करके सभी समूहों को अपना फीडबैक और सभी के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

चर्चा के बिंदु

उन्हें कल्पना करने के लिए कहें कि वे अपने ड्यूटी स्टेशन पर हैं और उन्हें यह जानकारी मिली है, जैसा कि इस समूह को दी गई है। उनसे चर्चा करने और यह नोट करने के लिए कहें कि इस जानकारी को पाने के बाद उनका पहला फीडबैक क्या होगा। साथ ही, उन्हें यह लिखने के लिए भी कहें कि वे इस स्थिति से कैसे निपटेंगे, खासकर यह ध्यान में रखते हुए कि इसमें शामिल व्यक्ति एक बच्चा है।

स्थिति 1

राहुल एक निम्न आय वाले इलाके में रहने वाला 14 साल का लड़का है जो, एक स्थानीय दुकान में तोड़फोड़ करते हुए पकड़ा गया है। वह काफी डरा हुआ है और पुलिस से बात करने से इनकार करता है। उसका डर कई कारणों से हो सकता है, जैसे अधिकार का डर, कानून प्रवर्तन के साथ उसके पिछले नकारात्मक अनुभव, या गरीब पृष्ठभूमि के बच्चों से जुड़ा सामाजिक भेदभाव।

अतिरिक्त चर्चा बिंदु

- राहुल के बारे में आपकी क्या राय है?
- आपको क्या लगता है कि राहुल ने दुकान में तोड़फोड़ क्यों करी?
- कौन से गैर–आलोचनात्मक व्यवहार उसे सुरक्षित महसूस करने और खुलकर बात करने में मदद कर सकते हैं?

स्थिति 2

एक 15 साल की लड़की स्कूल में एक शारीरिक लड़ाई में शामिल हुई, जिसमें उसे ऐसी चोटें आईं कि उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। वह एक अल्पसंख्यक जातीय समूह से है और स्कूल में पहले भी छोटे–मोटे झगड़ों में शामिल रही है। पुलिस और स्कूल के कर्मचारी उसके आक्रामक व्यवहार को उसके गहरे व्यवहारिक मुद्दों का संकेत मान सकते हैं, जो उसके जातीय पृष्ठभूमि और समाज में बनी धारणाओं से प्रभावित हो सकते हैं।

अतिरिक्त चर्चा बिंदु

- लड़की के बारे में आपकी क्या राय है?
- उसकी स्थिति को बेहतर ढंग से समझने के लिए आप लड़की से कैसे संवाद करेंगे?
- आप यह सुनिश्चित करने के लिए कौन सी रणनीति अपनाएँगे कि उसकी बात सुनी जाए और उसे आंका न जाए?

स्थिति 3

एक 15 वर्षीय लड़की स्कूल नहीं गई और दुकान से सामान चुराते हुए पकड़ी गई। वह एक निम्न आय वर्ग की पृष्ठभूमि से आती है, जहां संसाधन सीमित हैं। उसने स्वीकार किया कि उसने साथियों के दबाव में आकर चोरी की, लेकिन लड़की को लगता है कि अगर वह ऐसा नहीं करती तो उसके दोस्त उसे छोड़ देते। घर पर सहयोग की कमी के कारण, उस पर दोस्तों के साथ तालमेल बनाए रखने का दबाव और बढ़ जाता है। पुलिस उसे या तो एक पीड़ित या भविष्य के अपराधी के रूप में देख सकती है, जो उसके लिंग और आर्थिक स्थिति से जुड़ी सामाजिक धारणाओं से प्रभावित हो सकता है।

अतिरिक्त चर्चा बिंदु

- लड़की के बारे में आपकी क्या राय है?
- क्या आपको लगता है कि बच्ची को निगरानी गृह में रखा जाना चाहिए? क्यों/क्यों नहीं?
- आप अपनी गैर–धमकी भरी उपस्थिति दिखाने के लिए किस तरह के लहजे और शारीरिक भाषा का उपयोग करेंगे?

स्थिति 4

एक युवा लड़का छह महीने में दूसरी बार उसी इलाके में पैसे चुराते हुए पकड़ा गया है। वह साफ तौर पर डरा हुआ है, और समुदाय उसे बार–बार अपराध करने वाला मान रहा है। लड़का एक हाशिए पर रहने वाली जाति से आता है और अपने पिछले अपराध के कारण पहले ही अपने समुदाय और अधिकारियों, दोनों से भेदभाव का सामना कर चुका है। पुलिस द्वारा उसके दोबारा अपराध करने, उसकी जाति और समुदाय की धारणा से प्रभावित होकर उसके साथ सख्ती से पेश आने की संभावना हो सकती है।

अतिरिक्त चर्चा बिंदु

- लड़के के बारे में आपकी क्या राय है?
- आप इस मामले को कैसे संभाल सकते हैं ताकि उसके साथ भेदभाव न बढ़े?
- समुदाय की धारणा बदलने के लिए आप उनके साथ मिलकर कैसे काम कर सकते हैं?

सभी समूहों द्वारा अपने निष्कर्ष साझा करने के बाद, गैर–निर्णयात्मक व्यवहार की मुख्य विशेषताओं को संक्षेप में बताएं। समूह के सदस्यों से आत्म–विश्लेषण करने के लिए कहें कि क्या उन्होंने अपनी दी गई स्थिति से निपटते समय इन विशेषताओं को अपनाया था। साथ ही, उनसे यह भी पूछें कि गैर–निर्णयात्मक होने की विशेषताओं को समझने के बाद, क्या वे अब उसी स्थिति को किसी अलग तरीके से संभालना चाहेंगे?

गतिविधि - निर्णय बनाम अवलोकन

1. प्रतिभागियों को समझाएँ कि अक्सर हमारे फैसले पहले से बनी धारणाओं, रूढ़ियों या पूर्वाग्रहों पर आधारित होते हैं, जिससे विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समूहों के बारे में नकारात्मक विचार विकसित हो जाते हैं। ऐसे फैसले भेदभावपूर्ण कार्रवाइयों का कारण बन सकते हैं और पुलिस तथा उनके द्वारा सेवा प्राप्त करने वाले समुदाय के बीच विश्वास बनाने में बाधा डाल सकते हैं। दूसरी ओर, निष्पक्ष अवलोकन करते समय कोई भी आंतरिक मूल्यांकन या निर्णय नहीं लिया जाता है। फैसलों के बजाय अवलोकनों पर ध्यान केंद्रित करने से पुलिस अधिक समानुभूतिपूर्ण तरीके से जुड़ सकती है, जिससे खासकर बच्चों के लिए बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

2. प्रतिभागियों को परिदृश्यों की एक सूची प्रदान करें जो बच्चों से जुड़ी स्थितियों को दर्शाते हैं (पहले दिए गए परिदृश्यों के समान) और जो निर्णय या धारणाओं को भड़का सकते हैं।
   - एक बच्चा स्टोर के बाहर घूमता हुआ नजर आता है।
   - एक किशोर ऐसे कपड़े पहने हुए है, जो उसकी उम्र के हिसाब से उपयुक्त नहीं लगते।
   - एक बच्चा कक्षा में शरारत कर रहा है।
   - एक युवा सार्वजनिक स्थान पर आक्रामक व्यवहार करता पाया गया है।
   - एक 13 वर्षीय लड़की अपने दोस्तों के एक बड़े समूह के साथ देखी जाती है।
   - एक लड़का अपने से बड़े वयस्क को जवाब देते हुए पकड़ा गया है।
   - एक कम आय वाली पृष्ठभूमि का बच्चा स्टोर में मदद मांगता हुआ दिखाई देता है।
   - एक किशोर बिना हेलमेट के व्यस्त क्षेत्र में साइकिल चला रहा है।
3. प्रतिभागियों को छोटे समूहों (प्रत्येक में 4–5 लोग) में विभाजित करें और उनसे प्रत्येक परिदृश्य की समीक्षा करने के लिए कहें।
4. उन्हें प्रत्येक स्थिति के लिए संभावित निर्णय और धारणाओं की पहचान करने के लिए कहें। उदाहरण के लिए:
   - **निर्णय:** "यह बच्चा एक उपद्रवी है।"
   - **धारणा:** "यह बच्चा स्टोर के बाहर खड़ा है।"
5. समूहों को उनके काम से जुड़े फैसलों और निरीक्षणों के असर पर चर्चा करने के लिए प्रेरित करें।
6. समूहों से अपनी समझ और विचार दूसरों के साथ साझा करने के लिए कहें।
   - चर्चा का संक्षिप्त सार बनाएँ।
   - ऐसे निर्णयात्मक फैसले बच्चों पर किस तरह के बुरे असर डाल सकते हैं?
   - फैसलों की जगह सोच और नजरिए पर ध्यान देने के क्या फायदे हैं?
   - पुलिसकर्मी अपनी रोज़मर्रा की बातचीत में इस समझ का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं?

जब सभी समूह अपनी समझ साझा कर लें, तो गैर–निर्णयात्मक व्यवहार की मुख्य विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख करें। फिर समूहों से पूछें कि क्या उन्होंने इन विशेषताओं का उपयोग उस स्थिति को संभालते समय किया था जो उन्हें दी गई थी। साथ ही, यह भी पूछें कि इन विशेषताओं को जानने के बाद, क्या वे उसी स्थिति को किसी अन्य तरीके से संभालना चाहेंगे।

गैर-निर्णयात्मक व्यवहार की मुख्य विशेषताएँ

गतिविधि के बाद गैर–निर्णयात्मक व्यवहार की मुख्य विशेषताएँ साझा करें

- दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को समझना और उनका सम्मान करना।
- दूसरे के अनुभवों और भावनाओं को बेहतर समझने के लिए खुद को उसकी जगह पर रखना।

- बिना निष्कर्ष निकाले, अलग–अलग नजरियों और अनुभवों को खुले दिमाग से स्वीकार करना।
- यह समझना कि हर व्यक्ति की परिस्थिति अलग और जटिल हो सकती है।

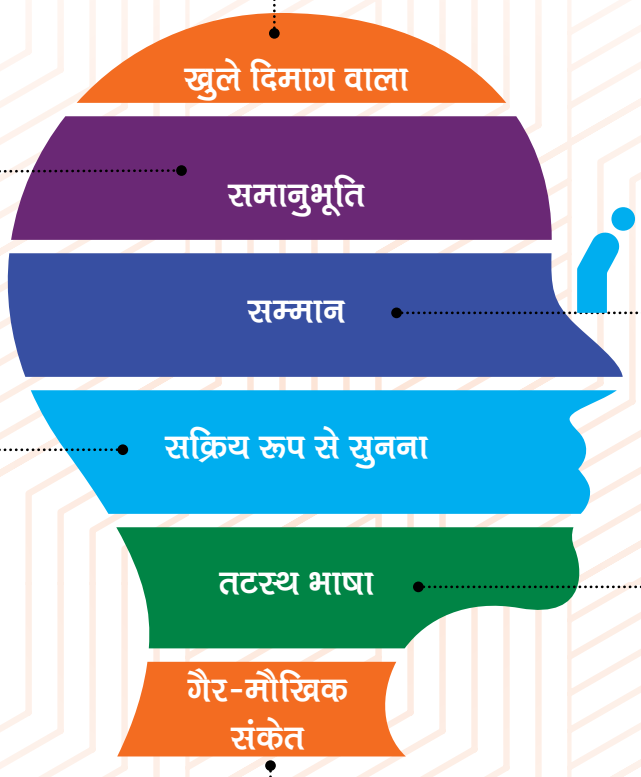

- दूसरों के साथ हमेशा सम्मान और आदर से पेश आना, चाहे उनका काम या पृष्ठभूमि कुछ भी हो।
- हर व्यक्ति के अंतर्निहित मूल्य को स्वीकारना।

- दूसरे व्यक्ति की बात ध्यान से सुनना, बिना बीच में टोके या जवाब दिए।
- यह दिखाने के लिए कि आपने सुना है, उनकी बातों को दोहराना।

- ऐसी भाषा का उपयोग करना जो पूर्वाग्रह या आलोचना रहित हो।
- ऐसे शब्द या लेबलों से बचना जिन्हें नकारात्मक या अपमानजनक माना जा सकता है।

- खुले और मित्रवत शारीरिक हाव–भाव बनाए रखना, जैसे सिर हिलाना, आँखों से संपर्क बनाना और खुली मुद्रा रखना।
- ऐसे हाव–भाव से बचना जो आलोचना या अस्वीकृति का संदेश देते हों।

समानुभूति को समझना

प्रतिभागियों के साथ समानुभूति के अर्थ पर चर्चा करें।

समानुभूति का मतलब है दूसरों की भावनाओं और अनुभवों को समझना और महसूस करना। यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमें स्वयं और दूसरों के बीच जुड़ाव बनाने में मदद करता है। समानुभूति वह सोच है जिससे हम वही महसूस करने की कोशिश करते हैं जैसा दूसरा व्यक्ति अनुभव कर रहा हो।

समझाएँ कि समानुभूति, सहानुभूति (सिम्पथी) से कहीं अधिक गहरी होती है। समानुभूति का मतलब केवल किसी के लिए "महसूस करना" नहीं है, बल्कि खुद को उनकी जगह पर रखकर उनके साथ "महसूस करना" है। यह हमें दूसरों की भावनाओं और परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है। समानुभूति की एक परिभाषा इस प्रकार है: "समानुभूति दूसरों की भावनाओं, ज़रूरतों और चिंताओं के बारे में जागरूकता है। " – डैनियल गोलमैन (वर्किंग विथ इमोशनल इंटेलिजेंस)

फिल्म (मुन्ना भाई एमबीबीएस) का यह दृश्य दिखाएँ:
(लिंक) [(https://drive.google.com/file/d/1KLpapo8bk5HaXoKa5pj9pxA1nnU2NCPs/view?usp=drive_link)](https://drive.google.com/file/d/1KLpapo8bk5HaXoKa5pj9pxA1nnU2NCPs/view?usp=drive_link)

प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि मुन्ना के व्यवहार में क्या अलग था।

इस दृश्य में, मुन्ना एक सफाई कर्मचारी को फर्श साफ करते हुए देखता है। तभी एक नर्स उस गीले फर्श पर चलकर चली जाती है, जिससे सफाई कर्मचारी नाराज हो जाता है। मुन्ना उसके गुस्से और निराशा को समझता है और उस तक सही तरीके से अपनी बात पहुँचाता है। जादू की झप्पी (गले लगा कर) वह सफाई कर्मचारी को खुश कर देता है, भले ही वह खुद भी गलती से गीले फर्श पर चल देता है। इस दृश्य में मुन्ना ने समानुभूति (एम्पथी) दिखाई, क्योंकि उसने सफाई कर्मचारी की मेहनत और उसकी कभी खत्म न होने वाली जिम्मेदारी को समझा और उसका सम्मान किया।

कृपया प्रतिभागियों को फिल्म तारे ज़मीन पर का यह वीडियो क्लिप दिखाएँ:
[https://drive.google.com/file/d/1GxO95wHjwryEETfzu1rOdFsQ0XV0t21O/view?usp=sharing (Show only first 5 minutes)](https://drive.google.com/file/d/1GxO95wHjwryEETfzu1rOdFsQ0XV0t21O/view?usp=sharing)

प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि निकुंभ सर ने कैसे बिना किसी निर्णय के ईशान को समझा और उसके साथ समानुभूति दिखाई। अपने गैर–निर्णयात्मक दृष्टिकोण के जरिए, उन्होंने यह जानने की कोशिश की कि ईशान किस परेशानी से गुजर रहा है। उन्होंने ईशान की गलतियों पर उसे डांटने या आलोचना करने के बजाय, धैर्य से उसकी समस्याओं को समझा। समानुभूति दिखाने के लिए, निकुंभ सर ने अपनी खुद की कहानी साझा की, जिससे ईशान को प्रेरणा और आत्मविश्वास मिला।

वैकल्पिक गतिविधि- समानुभूति मानचित्र

प्रतिभागियों को 4–5 लोगों के समूहों में विभाजित करें।

प्रत्येक समूह को एक समानुभूति मानचित्र टेम्पलेट और रीना की केस स्टडी प्रदान करें।

प्रत्येक समूह रीना की केस स्टडी पर चर्चा करेगा और नीचे दिए गए दिशा–निर्देशों के अनुसार समानुभूति मानचित्र के चार भाग भरेंगे:

- **कहती है:** रीना क्या कहती है या सीधे शब्दों में क्या व्यक्त करती है?
- **सोचती है:** रीना क्या सोच रही होगी, लेकिन कह नहीं रही है?
- **करती है:** रीना के कार्य और व्यवहार क्या हैं?
- **महसूस करती है:** रीना की भावनाएँ और मनोभाव क्या हैं?

- प्रत्येक समूह को अपने मानचित्र प्रस्तुत करने के लिए 5–10 मिनट दिए जाएँगे।

- सभी प्रतिभागी प्रस्तुति कर सकते हैं।
- प्रतिभागी प्रस्तुतियों के दौरान फीडबैक दें और विभिन्न व्याख्याओं और टिप्पणियों पर चर्चा करें।

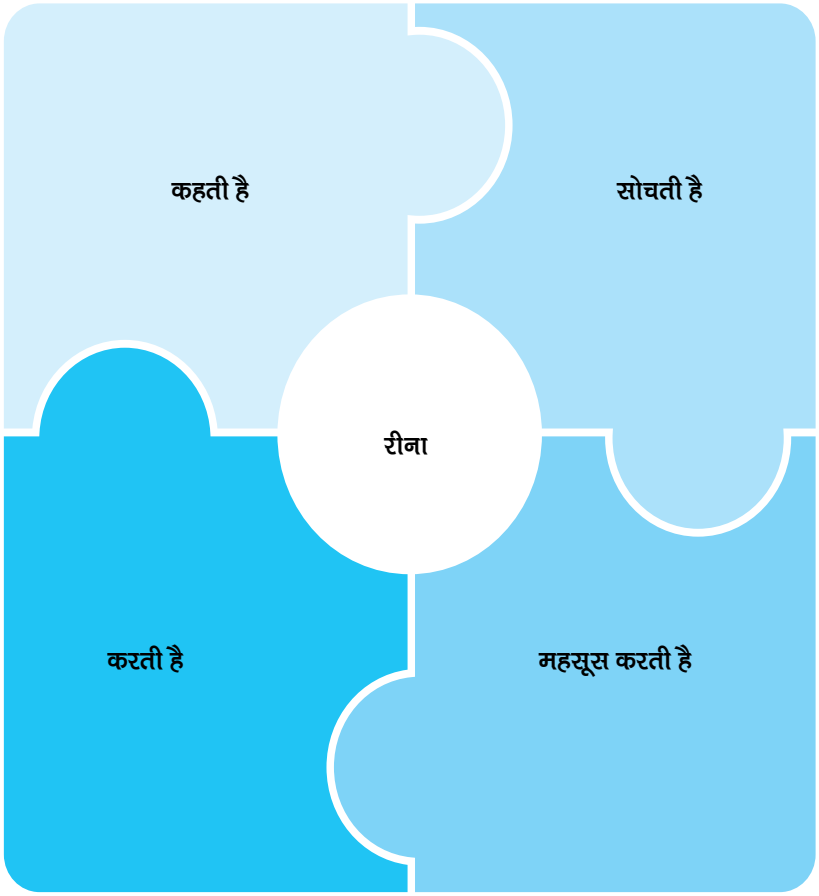

केस स्टडी

रीना, एक 10 वर्षीय नेत्रहीन बच्ची, रात में अकेली भटकती हुई मिली। वह डरी हुई है और रो रही है, और बार–बार अपनी माँ को बुला रही है। उसके परिवार की स्थिति स्पष्ट नहीं है। एक पुलिस अधिकारी को समानुभूति (एम्पथी) के साथ रीना के पास जाना चाहिए, उसे शांत करना चाहिए और यह पता लगाना चाहिए कि उसकी मदद कैसे की जा सकती है।

निष्कर्ष

- प्रतिभागियों को यह सोचने के लिए प्रेरित करें कि समानुभूति मानचित्र बनाने से उन्हें रीना के दृष्टिकोण को समझने में कैसे मदद मिली।
- चर्चा करें कि इन जानकारियों का वास्तविक जीवन की पुलिसिंग स्थितियों में कैसे उपयोग किया जा सकता है, ताकि जरूरतमंद लोगों से बेहतर तरीके से बातचीत की जा सके और उनकी सही मदद की जा सके।

मुख्य सीखों का सारांश

- बच्चों के साथ बिना किसी धारणा के व्यवहार करना विश्वास और अच्छा संबंध बनाने में मदद करता है, जिससे वे सुरक्षित और समझे जाने का अनुभव करते हैं। जब भी कोई मामला आपके पास आए, तो इस दृष्टिकोण को अपनाने की कोशिश करें। यह विश्वास प्रभावी बातचीत और सहयोग के लिए बहुत जरूरी है, खासकर उन परिस्थितियों में जहां बच्चे कमजोर स्थिति में होते हैं।
- जब बच्चों से बात करें, खासकर उन बच्चों से जो कानूनी मामलों में उलझे हुए हैं, तो उस सामाजिक माहौल और परिस्थितियों को समझने की कोशिश करें, जिनमें अपराध हुआ था।
- बेहतर बातचीत के लिए समानुभूति दिखाएँ। बच्चे की भावनाओं को ध्यान से सुनें और स्वीकार करें, ताकि आप उसकी ज़रूरतों और परिस्थितियों को अच्छे से समझ सकें। इससे आपको जिम्मेदारी से सोचने और दयालु निर्णय लेने में मदद मिलेगी।
- बच्चे के व्यवहार के असली कारणों को बेहतर समझने के लिए बिना किसी निर्णय के और समानुभूति के साथ बात करें। यह बच्चे में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद कर सकता है। इस दृष्टिकोण से, बच्चा लंबे समय तक अच्छे विकास की ओर बढ़ सकता है और समाज में दोबारा सही तरीके से जुड़ने में सफल हो सकता है।

सत्र 2

सक्रियता से सुनना एवं मौखिक और गैर–मौखिक संचार

सत्र के परिणाम

सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- मौखिक और गैर–मौखिक तरीकों से बच्चों से जुड़ने के अलग–अलग तरीके पहचान सकेंगे
- सक्रियता से सुनना और उसके महत्व को जान सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

चार्ट पेपर, मार्कर,
केस स्टडी प्रिंट आउट

पुनर्कथन

प्रतिभागियों के साथ सत्र 1 से प्राप्त मुख्य सीखों पर चर्चा करें।

अवधि

90 मिनट

प्रक्रिया

गतिविधि: सुनने वाले जोड़े

1. **जोड़ी बनाएँ:** प्रतिभागी एक साथी के साथ जोड़ी बनाएँ। यदि विषम संख्या है, तो एक समूह में तीन प्रतिभागी हो सकते हैं।
2. **टाइमर सेट करें:** उन्हें विषय दें "आपको अपनी नौकरी में सबसे ज़्यादा क्या पसंद है?"।
3. प्रत्येक जोड़े के पास बोलने के लिए 1 मिनट होगा, जबकि दूसरा बिना किसी व्यवधान के सुनेगा।
4. श्रोता को अपने साथी की बातों पर पूरा ध्यान केंद्रित करना चाहिए, और जुड़ाव दिखाने के लिए सिर हिलाना और आँख से संपर्क बनाए रखना जैसे गैर–मौखिक संकेतों का उपयोग करना चाहिए।
5. हर व्यक्ति के बोलने के बाद, सुनने वाला यह दिखाने के लिए कि उसने बात समझ ली है, अपने साथी की कही हुई बात को संक्षेप में बताएगा। (उदाहरण के लिए, "तो मैंने जो सुना वह यह है कि...")।
6. समूह में फिर से इकट्ठा हों और अपने अनुभवों पर चर्चा करें। प्रतिभागियों को यह साझा करने के लिए प्रेरित करें कि जब कोई उन्हें सुन रहा था, तब उन्हें कैसा लगा और जब उन्होंने खुद ध्यान से सुना, तब उन्हें कैसा अनुभव हुआ।

प्रतिभागियों के साथ 'सक्रियता से सुनने' की अवधारणा पर चर्चा करें।
गतिविधि के बाद सक्रियता से सुनने की अवधारणा को समझाएँ।

सक्रियता से सुनना

सक्रियता से सुनने का मतलब है, सचेत होकर सुनना। इसमें वक्ता के संदेश को सिर्फ सुनने की बजाय ध्यान से समझना शामिल है। सक्रिय श्रवण में सिर्फ कानों से सुनना ही नहीं, बल्कि पूरी इंद्रियों का इस्तेमाल करके वक्ता पर पूरा ध्यान देना भी शामिल है। एक 'सक्रिय श्रोता' को ऐसा दिखना चाहिए कि वह सचमुच में सुन रहा है, नहीं तो वक्ता समझ सकता है कि उसकी बात में रुचि नहीं है। वक्ता तक अपनी रुचि पहुँचाने के लिए हम मौखिक और गैर–मौखिक संकेतों का इस्तेमाल कर सकते हैं, जैसे आँख से संपर्क बनाए रखना, सिर हिलाना, मुस्कुराना, 'हाँ' कहना या 'मम्म हम्म' जैसी आवाजें निकालना ताकि वक्ता को लगे कि हम सुन रहे हैं। इससे वक्ता को लगेगा कि उसे फीडबैक मिल रहा है, जिससे वह और सहज, खुलकर और ईमानदारी से बात कर सकेगा।

सक्रियता से सुनने पर केस स्टडी

निम्न केस स्टडी को प्रतिभागियों के साथ साझा करें।
एक छोटे से गाँव में शीना नाम की 15 वर्षीय लड़की को अरेंज मैरिज के लिए मजबूर किया जा रहा था। एक चिंतित पड़ोसी ने गुमनाम रूप से स्थानीय पुलिस स्टेशन में बताया कि शादी की तैयारियाँ चल रही थीं। शिकायत मिलने पर, दो पुलिस अधिकारी जाँच करने के लिए शीना के घर गए। पहुँचने पर, शीना के माता–पिता ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। जब शीना की शादी के बारे में पूछा गया, तो उसके माता–पिता ने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि वे सिर्फ एक धार्मिक उत्सव मना रहे हैं। बातचीत के दौरान, शीना चुपचाप एक कोने में खड़ी थी और नजरें मिलाने से बच रही थी। उसके माता–पिता ने कहा कि वह बहुत शर्मीली है, लेकिन पुलिस अधिकारियों ने उसकी हल्की घबराहट को महसूस कर लिया – उसके हाथ काँप रहे थे और वह किसी से भी आँख नहीं मिला रही थी। जब उससे सीधे पूछा गया कि क्या उसकी शादी हो रही है, तो उसने धीरे से 'नहीं' कहा।

महिला पुलिस अधिकारी ने फैसला किया कि वह अकेले में शीना से बात करेगी। उसने शीना की एक सहेली के बारे में पता किया और उसे कहा कि वह शीना को बताए कि वह शाम को खेल के मैदान में उससे मिलना चाहती है। शाम को मिलने पर, पुलिस अधिकारी ने शीना को भरोसा दिलाया कि वह सुरक्षित है और उसे खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने शांत और प्यार भरा लहजा अपनाया और ध्यान रखा कि वह शीना की बात न टोके। पहले तो शीना झिझक रही थी, लेकिन धीरे–धीरे उसने सच बताया कि उसके माता–पिता सच में उसकी शादी की तैयारी कर रहे हैं। उसने डर और दुख जताया, लेकिन उसे रोकने में खुद को बेबस महसूस कर रही थी। शीना ने बताया कि उसके माता–पिता को लगता था कि उसकी शादी करने से उसका भविष्य सुरक्षित हो जाएगा।

शीना से मिली जानकारी के बाद, पुलिस अधिकारी उसके माता–पिता से दोबारा मिलने गए। उन्होंने समझाया कि अगर शीना की शादी होगी, तो इससे उसके भविष्य पर बुरा असर पड़ सकता है। उन्होंने माता–पिता को बाल विवाह के कानूनों के बारे में भी बताया। इसके अलावा, अधिकारियों ने परिवार को सरकारी योजनाओं से जोड़ने की पेशकश की, जिससे शीना को आगे की पढ़ाई और अच्छे भविष्य के लिए मदद मिल सके।

चर्चा के बिंदु

- प्रतिभागियों से चर्चा करें कि शीना के घबराए हुए व्यवहार और डर को समझना क्यों जरूरी था, भले ही उसने 'नहीं' कहा हो। खासतौर पर, उसकी शारीरिक भाषा और जवाब में अंतर से पता चला कि वह सच बोलने में असहज महसूस कर रही थी।
- जब शीना को उसके परिवार और जाने–पहचाने माहौल से अलग किया गया, तो वह बिना डर के खुलकर बोल सकी। इससे उसे अपने डर और अपनी स्थिति के बारे में खुलकर बात करने का मौका मिला।
- प्रतिभागियों से पूछें कि अगर बच्चा पुलिस से अकेले मिलने के लिए तैयार न हो, तो ऐसे में और क्या तरीके अपनाए जा सकते हैं ताकि उसकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और वह मदद ले सके।

सक्रियता से सुनने के संकेत

ध्यानपूर्वक या सक्रिय रूप से सुनने के गैर-मौखिक संकेत

मुस्कान

मुस्कान यह दिखाने का एक तरीका हो सकता है कि श्रोता ध्यान दे रहा है या जो कहा जा रहा है, उससे सहमत और खुश है। सिर हिलाने की तरह, मुस्कान भी यह जताने में मदद कर सकती है कि संदेश को सुना और समझा गया है।

आँखों से संपर्क

आमतौर पर, बातचीत के दौरान श्रोता का वक्ता की ओर देखना अच्छा माना जाता है और यह उसे प्रोत्साहित भी करता है। हालांकि कुछ लोगों, खासकर शर्मीले व्यक्तियों के लिए, लगातार आँखों में देखना असहज हो सकता है। इसलिए स्थिति के अनुसार आँखों से संपर्क बनाए रखना जरूरी है। वक्ता को सहज महसूस कराने के लिए आँखों से संपर्क के साथ मुस्कान और अन्य सकारात्मक हावभावों का उपयोग करें।

पोस्चर (शारीरिक मुद्रा)

बातचीत में शारीरिक मुद्रा से बहुत कुछ समझा जा सकता है। जब कोई व्यक्ति ध्यान से सुनता है, तो वह आमतौर पर थोड़ा आगे या बगल की ओर झुकता है। सक्रिय सुनने के अन्य संकेतों में सिर का हल्का झुकाव या सिर को एक हाथ पर टिकाना शामिल हो सकता है।

प्रतिबिम्ब (मिररिंग)

जब श्रोता वक्ता के चेहरे के भावों को बिना कहे अपना लेता है, तो यह दिखाता है कि वह ध्यान से सुन रहा है। ये प्रतिबिंबित भाव खासकर भावनात्मक स्थितियों में समानुभूति दिखाने में मदद करते हैं। अगर आप जानबूझकर चेहरे के भावों की नकल करते हैं, तो यह असावधानी का संकेत हो सकता है, लेकिन असली मतलब है कि आप समझ रहे हैं कि दूसरा व्यक्ति कैसा महसूस कर रहा है और उसके दृष्टिकोण से चीजों को देख रहे हैं।

ध्यान भटकाना

एक अच्छा श्रोता ध्यान भटकने नहीं देता। इसलिए वह बेचैनी दिखाने, बार–बार घड़ी देखने, डूडल बनाने, बालों से खेलने या नाखून खुरचने जैसी आदतों से बचता है। सुनते समय, सिर हिलाकर और उत्साह बढ़ाने वाले शब्दों या इशारों का इस्तेमाल करें।

ध्यान रखें कि कोई व्यक्ति सक्रिय सुनने के हावभाव और इशारे आसानी से सीख सकता है और उनकी नकल कर सकता है, चाहे वह वास्तव में सुन रहा हो या नहीं। लेकिन सच में सुनना और समझना, जिसे शब्दों से व्यक्त किया जाता है, नकल करना जितना आसान नहीं होता।

ध्यानपूर्वक या सक्रियता से सुनने के मौखिक संकेत

सकारात्मक प्रोत्साहन

हालांकि यह ध्यान देने का एक मजबूत संकेत है, सकारात्मक मौखिक प्रोत्साहन का इस्तेमाल करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। कुछ सकारात्मक शब्दों से प्रोत्साहन देने से बोलने वाले व्यक्ति को फायदा हो सकता है, लेकिन श्रोता को इन्हें काम से काम उपयोग करना चाहिए ताकि बात के मुख्य संदेश से ध्यान न हटे या संदेश के कुछ हिस्सों पर अनावश्यक जोर न पड़े। बार–बार एक ही शब्द या वाक्यांश जैसे 'बहुत अच्छा', 'हाँ' या 'वास्तव में' कहना, वक्ता को परेशान कर सकता है। बेहतर होगा कि आप विस्तार से बताएं और समझाएं कि आप किसी खास बात से क्यों सहमत हैं। हालांकि, सही समय और सही जगह पर इन शब्दों का सोच–समझकर इस्तेमाल करना भी उत्साह बढ़ाने और प्रोत्साहित करने में मदद कर सकता है।

याद रखना

कुछ महत्वपूर्ण बातें या यहाँ तक कि वक्ता का नाम याद रखना यह दिखाता है कि उसकी बात सुनी और समझी गई है, यानि सुनना प्रभावी रहा। पिछली बातचीत से जुड़ी बातें, विचार और अवधारणाएँ याद रखना यह साबित करता है कि ध्यान दिया गया था, जिससे वक्ता को अपनी बात जारी रखने का प्रोत्साहन मिल सकता है। लंबी बातचीत के दौरान, बाद में सवाल पूछते समय या स्पष्टीकरण लेते समय याददाश्त को ताजा करने के लिए छोटे–छोटे नोट्स बनाना मददगार हो सकता है।

सवाल पूछना

श्रोता यह दिखा सकते हैं कि वे ध्यान दे रहे हैं, जब वे संबंधित सवाल पूछते हैं या ऐसे बयान देते हैं जो वक्ता की बात को स्पष्ट करने या आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। सही सवाल पूछकर श्रोता यह भी साबित करते हैं कि वे वक्ता की बात में रुचि रखते हैं। खुले विचार वाले सवाल पूछना फायदेमंद होता है क्योंकि इनका जवाब सिर्फ 'हाँ' या 'नहीं' में नहीं दिया जा सकता, बल्कि विस्तार से बताया जाता है।

चिंतन

चिंतन का मतलब है कि वक्ता ने जो कहा, उसे दोहराना या उसका सार प्रस्तुत करना ताकि यह दिखाया जा सके कि बात समझ में आ गई है। यह एक प्रभावी तरीका है जो वक्ता के संदेश की पुष्टि करता है और यह दर्शाता है कि उसे ध्यान से सुना गया है।

स्पष्टीकरण

स्पष्टीकरण का मतलब है वक्ता से सवाल पूछना ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि संदेश सही ढंग से समझा गया है। इसमें आमतौर पर खुले सवाल शामिल होते हैं, जो वक्ता को अपनी बात को और विस्तार से समझाने का अवसर देते हैं।

सारांशीकरण

सारांश दोहराना एक तकनीक है जिसमें श्रोता, वक्ता की कही गई बात को अपने शब्दों में दोहराता है। इसमें मुख्य बिंदुओं को समझकर उन्हें साफ और तार्किक तरीके से प्रस्तुत करना शामिल होता है, जिससे वक्ता को जरूरत पड़ने पर सुधार करने का अवसर मिलता है। यह उस जानकारी को भी दोबारा दोहराने में मदद करता है, जो बच्चे ने पहले साझा की थी।

ऑडियो क्लिप चलाएँ: तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो। https://www.youtube.com/watch?v=C8eAKT-zQXk प्रशिक्षण के दौरान पहले 50 सेकंड सुने जाएंगे। प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि अभिनेत्री बाहरी रूप से मुस्कुरा रही है, लेकिन अंदर ही अंदर वह वैवाहिक समस्याओं से परेशान है। पुरुष अभिनेता उसकी मुस्कान देखने के बावजूद, उसके भीतर की तकलीफ को महसूस कर लेता है। यह दिखाता है कि हर मुस्कुराता हुआ चेहरा जरूरी नहीं कि खुश हो – कभी–कभी मुस्कान के पीछे गहरी भावनाएँ छिपी होती हैं।

मुख्य सीखों का सारांश

- सक्रियता से सुनने का मतलब है कि केवल सुनना ही नहीं, बल्कि पूरा ध्यान से सुनना।
- इसका मतलब यह है कि वक्ता के संदेश को सिर्फ़ सुनने के बजाय, उसकी शारीरिक भाषा, आँखों की चमक, हाथों की हरकतें और चेहरे के भावों पर भी ध्यान देना।
- सक्रियता से सुनने में सभी इंद्रियों से सुनना शामिल है और साथ ही वक्ता पर पूरी तरह ध्यान देना भी जरूरी है। अगर श्रोता ध्यान नहीं देता, तो वक्ता यह सोच सकता है कि उसकी बातों में रुचि नहीं है।
- सक्रियता से सुनने के गैर–मौखिक संकेतः मुस्कान, आँखों से संपर्क, शरीर की मुद्रा, भावों को प्रतिबिंबित करना (दर्पण की तरह दिखना), और ध्यान न भटकाना। जब बच्चों से बातचीत की जा रही हो, तब उनके गैर–मौखिक संकेतों पर ध्यान देना बहुत जरूरी होता है। उदाहरण के लिए, यौन शोषण के मामलों में बच्चे अक्सर डरे होते हैं और खुलकर बात करने में हिचकिचाते हैं। ऐसे मामलों में महत्वपूर्ण गैर–मौखिक संकेतों की पहचान करना जरूरी होता है, जैसेः किसी के छूने पर डर जाना, बार–बार खुजली करना, व्यवहार में अचानक बदलाव आना, खुद को नुकसान पहुँचाने की प्रवृत्ति दिखाना।
- सक्रिय सुनने के मौखिक संकेत – सकारात्मक सुदृढ़ीकरण, याद रखना, सवाल करना, चिंतन, स्पष्टीकरण, सारांश बनाना।
- पुलिस कर्मियों को अक्सर ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है जहाँ वास्तविक स्थिति मौखिक रूप से साझा की जा रही स्थिति से अलग होती है। सक्रिय सुनने के कौशल का उपयोग करके, वे गहन विश्लेषण कर सकते हैं और तथ्यों की पहचान कर सकते हैं।

सत्र 3

बच्चों के साथ बातचीत करते समय भेदभाव रहित व्यवहार अपनाना

सत्र के परिणाम

इस सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- कलंकित (स्टिग्माटाइजिंग) और कलंकित न करने वाले (नॉन–स्टिग्माटाइजिंग) व्यवहार के प्रकार और उनके बीच अंतर को बता सकेंगे
- यह विस्तार से बता सकेंगे कि अवचेतन पूर्वाग्रह (अनकॉन्शियस बायस) क्या होते हैं और ये कैसे काम करते हैं
- बच्चों के साथ बातचीत करते समय एक पुलिस अधिकारी के रूप में कलंकित न करने वाले व्यवहार को अपनाना क्यों जरूरी है, इसे स्पष्ट कर सकेंगे
- बच्चों और उनके परिवारों से बातचीत में कलंकित न करने वाले व्यवहार को अपनाने की आवश्यकता और इसके महत्व को उजागर कर सकेंगे
- बच्चों के साथ सम्मानजनक और सहयोगपूर्ण जुड़ाव सुनिश्चित करने के लिए अपनाई जाने वाली रणनीतियों की सूची बना सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

चार्ट पेपर, मार्कर, केस स्टडी प्रिंट आउट

अवधि

90 मिनट

पुनर्कथन

सक्रियता से सुनने पर पिछले सत्र से मुख्य बातों की संक्षिप्त समीक्षा करें।

प्रक्रिया

भेदभाव रहित व्यवहार का परिचय

परिभाषा: भेदभाव रहित व्यवहार का मतलब है बच्चों से ऐसे तरीके से बात करना जिससे उन पर कोई गलत ठप्पा (कलंक) या नकारात्मक लेबल न लगे या कोई धारणा न बने। यह जरूरी है कि बच्चों से सम्मानपूर्वक और सहायक तरीके से बातचीत की जाए ताकि वे खुद को सुरक्षित महसूस करें और खुलकर अपनी बात कह सकें।

किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 की धारा 3, उपधारा (viii) में कहा गया है कि बच्चों के साथ बातचीत में ऐसे शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जो उन्हें दोषी ठहराने वाले या नकारात्मक हों। खासकर, जब बच्चे किसी अपराध में शामिल हों या जिन्हें देखभाल और सुरक्षा की जरूरत हों तो उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए जिससे वे खुद को दोषी या अपराधी महसूस करें। इस सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बच्चों के साथ किसी भी तरह की कानूनी या औपचारिक प्रक्रिया में ऐसा लहजा न अपनाया जाए जो उन्हें अपराधी साबित करने वाला लगे या उनके आत्म–सम्मान को ठेस पहुंचाए।

चर्चा के बिंदु

जेजे अधिनियम, 2015 की धारा 3 में निहित, भेदभाव रहित व्यवहार के प्रमुख सिद्धांतों के कुछ प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं:

- **सम्मान और गरिमा:** बच्चों के साथ हमेशा सम्मानजनक व्यवहार करें और उनकी परिस्थितियों या व्यवहार के बावजूद उनकी गरिमा बनाए रखें। किसी बच्चे को "अपराधी" कहने की बजाय, उसे "कानून के साथ संघर्ष में बच्चा" कहना बेहतर होता है। इससे उसकी कानूनी स्थिति तो स्पष्ट होती ही है, बल्कि उसकी छवि भी नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं होती।
- **लेबल से बचें:** ऐसे शब्दों का इस्तेमाल न करें जो बच्चों को अलग–थलग या हीन महसूस करा सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे को "समस्याग्रस्त" या "परेशान" कहने की बजाय, यह कहना अधिक उचित होगा कि वह "व्यवहार संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहा है।" इससे बच्चे की स्थिति को बिना किसी नकारात्मक अर्थ के समझाया जा सकता है।
- **समानुभूति और समझ:** बच्चों से बातचीत करते समय समानुभूति रखें और उनकी भावनाओं व नजरिए को समझने की कोशिश करें। जब किसी बच्चे से उसके कार्यों के बारे में बात करें, तो सीधे आरोप लगाने के बजाय खुले और मददगार सवाल पूछें, जैसे "क्या आप मुझे यह समझाने में मदद कर सकते हैं कि क्या हुआ?" इससे बच्चा बिना डरे अपनी बात कह सकेगा। किसी नतीजे पर जल्दबाजी में पहुंचने या दोष देने से बचें।
- **समावेशी भाषा:** ऐसी भाषा का इस्तेमाल करें जो बच्चों को दोषी महसूस न कराए और न ही उन पर किसी तरह का निर्णय लादे। उदाहरण के लिए, "आपने गलत चुनाव किया" कहने की बजाय कहें, "ऐसा लगता है कि एक कठिन निर्णय लिया गया था। आइए बात करते हैं कि ऐसा क्यों हुआ।" इससे बच्चा खुद को दोषी महसूस किए बिना अपनी स्थिति को बेहतर ढंग से समझ पाएगा।
- **गोपनीयता:** बच्चे की गोपनीयता बनाए रखें। उसकी स्थिति पर इस तरह बात न करें जिससे उसे कोई शर्मिंदगी या परेशानी हो। बच्चे की पारिवारिक स्थिति, व्यवहार या परिस्थितियों पर चर्चा सिर्फ एक निजी स्थान पर करें। यह ध्यान रखें कि यह जानकारी केवल उन्हीं लोगों से साझा करें जो उसकी देखभाल या कानूनी मामले से सीधे जुड़े हों।

केस परिदृश्य के माध्यम से व्यावहारिक उदाहरण और क्रियान्वन

उद्देश्य: प्रतिभागी रोल–प्ले के माध्यम से गैर–कलंकित व्यवहार का अभ्यास और प्रदर्शन करेंगे।

निर्देश:

1. **तैयारी: प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बाँटें और प्रत्येक समूह को एक ऐसी स्थिति दें जिसमें एक बच्चा संवेदनशील परिस्थिति में हो।**

परिस्थिति 1: कानून से टकराव में बच्चा

एक 15 साल के लड़के को पुलिस ने बाज़ार से चोरी करने के आरोप में पकड़ा। वह गरीब परिवार से है और कहता है कि उसने यह काम अपने परिवार की मदद के लिए किया। इस स्थिति में समूह को रोल–प्ले करना होगा, जहां एक पुलिस अधिकारी या सामाजिक कार्यकर्ता लड़के से सवाल करेगा।

परिस्थिति 2: बिना लाइसेंस के गाड़ी चलाने वाली लड़की

एक 17 साल की लड़की अपने पिता की कार बिना लाइसेंस के चला रही थी, जिससे एक हल्का हादसा हो गया। पुलिस मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभालती है। रोल–प्ले करें कि पुलिस अधिकारी इस स्थिति को कैसे संभाल सकता है, बिना बच्चे को डराए।

परिस्थिति 3: भीख माँगता बच्चा

एक 10 साल की लड़की रेलवे स्टेशन पर भीख माँग रही थी, तब पुलिस को बुलाया गया। बच्ची बहुत कमजोर लग रही थी और ठीक से बात नहीं कर पा रही थी। रोल–प्ले करें कि पुलिस अधिकारी किस तरह प्यार और भरोसे से बच्ची से बात कर सकता है, ताकि वह डरे नहीं और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

परिस्थिति 4: घर से भागा हुआ बच्चा

एक 13 साल का लड़का देर रात सड़क पर अकेला मिला। जब पुलिस ने उससे पूछा, तो उसने बताया कि वह घर की परेशानियों के कारण भाग आया है। बातचीत के दौरान पुलिस को शक होता है कि उसे मानसिक समस्या भी हो सकती है।

समूह को रोल–प्ले करना होगा कि पुलिस अधिकारी लड़के से कैसे सहजता से बात करे, उसे डराए बिना उसकी मदद करे और उसे सुरक्षित महसूस कराए।

1. **रोल–प्ले:** प्रत्येक समूह अपनी स्थिति का अभिनय करके बाकी प्रतिभागियों को दिखाएगा।
2. **फीडबैक:**
   चर्चा का संचालन करें कि कौन से तरीके प्रभावी थे और क्या बेहतर किया जा सकता था। भेदभाव रहित (ग़लत ठहराने वाले) व्यवहार के अनुप्रयोग पर रचनात्मक फीडबैक दें। (नीचे चर्चा के लिए कुछ दिशानिर्देश दिए गए हैं)।

- **उपयोग की गई भाषा**
  - *सही तरीका:* क्या प्रतिभागी ने "अपराधी", "मुसीबत खड़ा करने वाला" या "दुष्ट" जैसे नकारात्मक शब्दों के उपयोग से बचें? क्या उन्होंने बच्चे के व्यवहार और स्थिति को बिना किसी आरोप के, सामान्य और सम्मानजनक शब्दों में बताया?
  - *सुधार:* प्रतिभागियों को ऐसी भाषा अपनाने के लिए प्रेरित करें जो बच्चे की ज़रूरतों और उसमें बदलाव की संभावना पर ध्यान दे, न कि उसे गलत तरीके से लेबल करे।
    प्रश्न पूछें: "क्या आप अपनी बात इस तरह कह सकते थे जिससे बच्चे पर कोई नकारात्मक ठप्पा न लगे?"
- **स्वर और शारीरिक भाषा**
  - *सही तरीका:* क्या बोलने का तरीका शांत, सम्मानजनक और बिना डराने–धमकाने वाला था? क्या शरीर की भाषा खुलेपन और बिना किसी पूर्वाग्रह के थी?
  - *सुधार:* उन क्षणों को पहचानें जहाँ बोलने का लहजा या शारीरिक हावभाव डराने वाला या अस्वीकार्य लग सकता था।
    प्रश्न पूछें: "क्या आपकी शारीरिक भाषा आपके शब्दों के अनुरूप थी? क्या आपके बोलने के तरीके से बच्चे को सुरक्षित महसूस हुआ?"
- **सम्मान और गरिमा**
  - *सही तरीका:* क्या प्रतिभागियों ने बच्चे की गरिमा का सम्मान किया, चाहे उसकी परिस्थिति या उसका किया गया काम कुछ भी रहा हो?
  - *सुधार:* बातचीत के दौरान बच्चे की गरिमा बनाए रखने पर ध्यान दें।
    प्रश्न पूछें: "क्या कोई ऐसा समय था जब बच्चे को शर्मिंदगी या अपमान महसूस हो सकता था?"
- **समानुभूति और समझ**
  - *सही तरीका:* क्या प्रतिभागियों ने बच्चे की भावनाओं और नजरिए को समझने की कोशिश की? क्या सवाल इस तरह पूछे गए कि बच्चा खुलकर अपनी बात रख सके?
  - *सुधार:* उन मौकों पर चर्चा करें, जहाँ बच्चे के प्रति और अधिक समानुभूति दिखाई जा सकती थी।
    प्रश्न पूछें: "क्या आप ऐसे सवाल पूछ सकते थे जिससे बच्चे की स्थिति को और बेहतर समझा जा सके?"
- **निर्णय और दोषारोपण से बचाव**
  - *सही तरीका:* क्या प्रतिभागी बच्चे या उसके परिवार पर दोष डालने से बचे? क्या उनके बयान बिना किसी निर्णय या आलोचना के थे? उदाहरण के लिए, ऐसे वाक्यों से बचना चाहिए: "तुम जैसे बच्चे

हमेशा ऐसी हरकतें करते हो। "तुम्हारे माता–पिता ने तुम्हें अच्छे संस्कार नहीं दिए। "क्या तुम्हारे स्कूल में यही सिखाया जाता है?"

- *सुधारः* उन स्थितियों पर ध्यान दें जहाँ बच्चे को दोषी ठहराया गया हो और सुझाव दें कि इसे सकारात्मक तरीके से कैसे कहा जा सकता था। प्रश्न पूछें: "क्या आप अपनी चिंता को बिना किसी आलोचना के व्यक्त कर सकते थे?" "क्या आप अपनी भाषा को और सरल व समझने योग्य बना सकते थे, ताकि बच्चा बेहतर समझ सके?"

- **सुनना और भागीदारी सुनिश्चित करना**
- *सही तरीकाः* क्या प्रतिभागियों ने बच्चे को खुलकर अपनी बात कहने और अपने विचार साझा करने का मौका दिया? क्या बच्चे के विचारों को सम्मानपूर्वक सुना गया और उसे प्रक्रिया में महत्व दिया गया?
  सुधारः बच्चे को बातचीत में अधिक शामिल करने के लिए सुझाव दें।
  प्रश्न पूछें: "आप बच्चे को बातचीत में और अधिक शामिल करने के लिए क्या कर सकते थे?" बातचीत की शुरुआत आसान और सामान्य सवालों से करें, जैसे – "तुमने नाश्ते में क्या खाया?" ताकि बच्चा सहज महसूस करे। फिर धीरे–धीरे अधिक व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण सवालों की ओर बढ़ें। सवालों के बीच थोड़ी देर रुकें, ताकि बच्चा बिना किसी दबाव के सोच–समझकर जवाब दे सके।

संरचनात्मक समाधान

- *सही तरीकाः* क्या समाधान या अगले कदम इस तरह से चर्चा किए गए कि वे बच्चे के सुधार, देखभाल और भलाई पर केंद्रित हों, न कि केवल सजा पर?
  सुधारः देखें कि दिए गए समाधान रचनात्मक और भविष्य को बेहतर बनाने वाले हैं या नहीं।
  प्रश्न पूछें: "क्या बच्चे की ज़रूरतों को एक सहायक और संवेदनशील तरीके से समझा गया?" सुझाव दें: "क्या आप ऐसे विकल्प बता सकते थे जो सुधार और पुनर्वास पर ध्यान देते, न कि सिर्फ सजा के नतीजों पर?"

गतिविधि: भेदभाव से निपटने पर केस स्टडी

तैयारी:

एक ऐसी स्थिति प्रस्तुत करें जहाँ किसी बच्चे को अधिकार रखने वाले लोगों (जैसे पुलिस, शिक्षक या अन्य अधिकारी) से अपमानजनक या गलत व्यवहार का सामना करना पड़ा हो।

केस स्टडी: तोड़फोड़ में शामिल बच्चे के साथ पुलिस की बातचीत

पृष्ठभूमि: रोहित मध्यमवर्गीय इलाके में रहने वाला, 16 साल का एक लड़का है। एक दिन उसने और उसके दोस्तों ने सामुदायिक पार्क में तोड़फोड़ की, जिसके बाद उसे पुलिस ने पकड़ लिया। पार्क की बेंच, दीवारें और खेल के उपकरण स्प्रे पेंट से खराब कर दिए गए थे, जिससे काफी नुकसान हुआ। जब पुलिस पहुंची, तो रोहित के दोस्त भाग गए, लेकिन रोहित पकड़ा गया और उसे अकेले पुलिस का सामना करना पड़ा। पुलिस थाने में अधिकारियों ने रोहित को सख्ती से डांटा। उन्होंने उसे "मुसीबत खड़ी करने वाला" और "दूसरों पर बुरा असर डालने वाला" कहा। एक अधिकारी ने उसके माता–पिता के सामने कहा, "अगर बच्चे को सही तरीके से नहीं समझाया जाए, तो यही होता है।" अधिकारियों ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि रोहित ने तोड़फोड़ क्यों की, और न ही उसे पूरी तरह से अपनी बात समझाने का मौका दिया।

रोहित को उसके माता–पिता के आने तक कई घंटों तक पुलिस थाने में इंतजार करवाया गया। इस दौरान, उसने पुलिस अधिकारियों को यह कहते सुना कि उसका "भविष्य खराब है" और वह "जल्द या बाद में जेल में जाएगा"। जब उसके माता–पिता पहुंचे, तो अधिकारियों ने उन्हें डांटा। रोहित को औपचारिक चेतावनी देकर छोड़ दिया गया, लेकिन न तो उसकी भावनाओं को समझने की कोशिश की गई और न ही सुधार के किसी विकल्प, जैसे काउंसलिंग या सामुदायिक सेवा, पर चर्चा की गई। इस पूरी घटना के बाद रोहित को बहुत अपमानित और डरा हुआ महसूस हुआ। वह खुद को दूसरों से दूर रखने लगा और कई हफ्तों तक घर से बाहर जाने से कतराने लगा।

समूह से चर्चा करने के लिए कहें कि इस स्थिति को कलंकित करने (बच्चे को दोषी ठहराने) से रोकने के लिए कैसे बेहतर तरीके से संभाला जा सकता था।

चर्चा के बिंदु

कलंकित करने वाले व्यवहार के उदाहरण पहचानें

- **लेबल लगाना और धारणा बनाना:** पुलिस अधिकारियों ने बिना कारण जाने ही रोहित को "मुसीबत खड़ी करने वाला" और "समाज के लिए परेशानी" कह दिया। ऐसे शब्द रोहित के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचा सकते हैं और उसके बारे में नकारात्मक सोच को बढ़ावा दे सकते हैं।
- **माता–पिता को दोष देना:** अधिकारी का यह कहना – "अगर बच्चे को सही तरीके से नहीं समझाया जाए, तो यही होता है।" – सिर्फ एक कठोर टिप्पणी नहीं थी, बल्कि इससे रोहित को अपने परिवार की असफलता के लिए खुद को दोषी महसूस होने लगा होगा।
- **नकारात्मक भविष्य की भविष्यवाणी:** जब अधिकारियों ने यह कहा कि रोहित का भविष्य अपराध में जा सकता है या वह जेल पहुँच सकता है, तो उन्होंने उसके सुधार की संभावना को अनदेखा कर दिया। इससे ऐसा संदेश गया कि उसकी गलती को ठीक करने का कोई रास्ता नहीं है।
- **गलती के पीछे के कारणों को न समझना:** अधिकारियों ने यह नहीं पूछा कि रोहित और उसके दोस्तों ने तोड़फोड़ क्यों की। वे यह समझने की कोशिश भी नहीं कर पाए कि इसके पीछे दोस्ती का दबाव, भावनात्मक संघर्ष या किसी तरह की नाराजगी हो सकती थी, जिसे काउंसलिंग या सही मार्गदर्शन से सुधारा जा सकता था।
- **सुधारात्मक उपायों को शामिल करने में विफलता:** रोहित को उसके कार्यों के परिणाम समझाने और सही दिशा में आगे बढ़ने में मदद करने के लिए न तो बाल कल्याण सेवाओं, न ही परिवीक्षा अधिकारियों (परोवेशन ऑफिसर) और न ही समुदाय–आधारित हस्तक्षेपों को शामिल करने का कोई प्रयास किया गया।

ऐसे वैकल्पिक दृष्टिकोण सुझाएँ जो कलंकित न करने वाले सिद्धांतों के साथ जुड़े हों।

- निर्णयात्मक लेबल से बचनाः रोहित को "उपद्रवी" कहने के बजाय, पुलिस अधिकारी उसके व्यक्तित्व पर टिप्पणी न करके केवल उसके व्यवहार पर ध्यान केंद्रित कर सकते थे। उदाहरण के लिए, वे यह कहने के बजाय कि "तुम समाज के लिए परेशानी हो", यह कह सकते थेः "सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाना समुदाय के लिए नुक्सानदायिक है और इसके परिणाम हो सकते हैं।" इस तरह की भाषा बच्चे को कलंकित करने के बजाय उसके व्यवहार और उसमें बदलाव की संभावना पर ध्यान केंद्रित करती है।
- बच्चे को बातचीत में शामिल करनाः अधिकारियों को रोहित से यह पूछने का मौका देना चाहिए था कि उसने तोड़फोड़ में भाग क्यों लिया। इससे उसे अपनी भावनाएँ और किसी भी दबाव को खुलकर व्यक्त करने का अवसर मिलता। खुले सवाल, जैसे "क्या तुम हमें बता सकते हो कि उस दिन क्या हुआ था?", उसे आत्मचिंतन करने में मदद कर सकते थे और शर्मिंदगी की भावना को कम कर सकते थे। यह भागीदारी के सिद्धांत के अनुरूप है, जो बच्चों को सुने जाने और उनके हितों से जुड़े निर्णयों में भाग लेने का अधिकार देता है (जेजे अधिनियम, 2015 की धारा 3, उपधारा iii)।
- माता–पिता की रचनात्मक भागीदारीः रोहित के माता–पिता को उसके सामने डांटने के बजाय, अधिकारियों को एक सहयोगी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए था। वे इस पर चर्चा कर सकते थे कि सभी मिलकर कैसे रोहित का सही मार्गदर्शन कर सकते हैं और उसके व्यवहार को सुधारने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे दोष देने के बजाय यह कह सकते थेः "हम इस व्यवहार को ठीक करने में आपकी और आपके परिवार की कैसे सहायता कर सकते हैं?"। यह पारिवारिक उत्तरदायित्व के सिद्धांत के अनुरूप है (जेजे अधिनियम, 2015 की धारा 3, उपधारा v), जो बिना दोषारोपण के बच्चे की देखभाल और विकास में परिवार की भूमिका को स्वीकार करता है।
- दंड से अधिक पुनर्वास पर जोर देनाः पुलिस को रोहित को सिर्फ सजा देने के बजाय, उसके कार्यों के प्रभाव को समझाने और उसकी भावनात्मक या मानसिक समस्याओं को पहचानने में मदद करनी चाहिए थी। इसके लिए वे उसे परामर्श (काउंसलिंग) की सिफारिश कर सकते थे, ताकि वह अपने व्यवहार को सुधार सके।
- गोपनीयता और सम्मान बनाए रखनाः पुलिस को यह सुनिश्चित करना चाहिए था कि रोहित की गोपनीयता और सम्मान बना रहे। उसे और उसके माता–पिता को दूसरों के सामने डांटने या फटकारने के बजाय, एक निजी स्थान पर बातचीत होनी चाहिए थी। इसके अलावा, ऐसे शब्दों से बचना चाहिए था जो उसे अपमानित या शर्मिंदा महसूस करवा सकते थे। यह गोपनीयता और सम्मान के अधिकार के सिद्धांत के अनुरूप है (जेजे अधिनियम, 2015 की धारा 3, उपधारा xi), जो यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी बच्चे की पहचान और स्थिति को अनावश्यक रूप से सार्वजनिक न किया जाए। यह गोपनीयता और गोपनीयता के अधिकार के सिद्धांत (जेजे अधिनियम, 2015 की धारा 3, उपधारा xi) के अनुरूप है, और सुनिश्चित करता है कि बच्चे की पहचान और स्थिति अनावश्यक रूप से उजागर न हो।

गतिविधिः कलंकित करने बनाम कलंकित न करने वाले शब्दों का विश्लेषण

कथन इस प्रकार हैंः

- "तुम हमेशा परेशानी खड़ी करते हो। तुम बाकी बच्चों की तरह व्यवहार क्यों नहीं करते?" (कलंकित करना)
- "मैंने देखा है कि तुम कुछ मुश्किलों से गुजर रहे हो। हम तुम्हारी मदद कैसे कर सकते हैं?" (कलंकित न करना)
- "तुम्हें बच्चों के साथ कड़ाई बरतनी चाहिए, नहीं तो वे तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे।" (कलंकित करना)
- "सकारात्मक संबंध बनाने से बच्चों को सुनने और सहयोग करने की प्रेरणा मिलती है।" (कलंकित करना)
- "टूटे हुए परिवार के बच्चों में अपराध करने की संभावना होती है।" (कलंकित करना)

- "सभी बच्चे सही समर्थन से आगे बढ़ सकते हैं।" (कलंकित ना करना)
- "आजकल के बच्चे अधिकार का सम्मान नहीं करते।" (कलंकित करना)
- "बच्चों के साथ सम्मान से पेश आने से एक–दूसरे को समझने में मदद मिलती है।" (कलंकित न करना)
- "अगर कोई बच्चा गलत काम करता है, तो ऐसा इसलिए क्योंकि उसके माता–पिता ख़राब हैं।" (कलंकित करना)
- "बच्चे के व्यवहार पर असर डालने वाले सभी कारणों पर ध्यान दें, ताकि उसे सही सहायता मिल सके।" (कलंकित न करना)
- "तुम इस तरह के व्यवहार से अपना जीवन मुश्किल में डाल रहे हो। तुम्हें क्या हो गया है?" (कलंकित न करना)
- "मैं तुम्हारे कामों के बारे में चिंतित हूँ। चलो मिलकर सोचते हैं कि हम सकारात्मक बदलाव कैसे ला सकते हैं?" (कलंकित न करना)

- प्रतिभागियों से कहें कि वे कथनों का विश्लेषण करें, बच्चों पर उनके प्रभाव को समझें, और यह देखें कि कैसे भेदभाव रहित तरीके अपनाकर बच्चों के साथ बेहतर संवाद स्थापित किया जा सकता है।
- प्रतिभागियों से कहें कि वे प्रत्येक कथन को ध्यान से सुनें और एक पंक्ति में खड़े रहें। अगर उन्हें लगता है कि कथन कलंकित करने वाला है, तो वे एक कदम आगे बढ़ें। अगर उन्हें लगता है कि यह कलंकित करने वाला नहीं है, तो वे जहां हैं वहीं खड़े रहें।
- फिर, प्रतिभागियों से उनके विचारों पर चर्चा करें – उन्होंने कदम क्यों बढ़ाया या क्यों नहीं?
- अंत में, शब्दों और वाक्यांशों की एक सूची साझा करें। (इसके लिए अनुलग्नक 1 में एक उदाहरण सूची दी गई है।)

नोटः प्रत्येक कथन पर चर्चा के बाद पूछें कि क्या कोई प्रतिभागी अपनी मूल स्थिति से बदलना चाहता है।

गतिविधिः मीडिया क्लिप का विश्लेषण

1. एक या अधिक वीडियो क्लिप चलाएँ जो विभिन्न स्थितियों में बच्चों के साथ बातचीत को दर्शाती हैं।
   वीडियो 1: पुलिस 5 साल के बच्चे के साथ बातचीत कर रही है (केवल 3–4 मिनट के लिए चलाएँ) https://youtu.be/WxL7k4dHOSw

   वीडियो 2: माता–पिता के साथ बातचीत करते हुए एक बाल कार्यकर्ता (7 मिनट का वीडियो) https://youtu.be/3KlqeLc3reU

   वीडियो 3: द रोज़ जिसमें स्कूल में बच्चों के प्रति बाल हिंसा और कलंकित करने वाले व्यवहार दर्शाया गया है।
   https://www.youtube.com/watch?v=v6OwyCzfgtw
2. कलंकित और कलंकित न करने वाले व्यवहार के उदाहरणों पर ध्यान देते हुए क्लिप का विश्लेषण करें और चर्चा को आगे बढ़ाएं। यह समझने में मदद करें कि बातचीत बच्चे की भावनाओं और भलाई को कैसे प्रभावित कर सकती है। साथ ही, कलंकित न करने वाले दृष्टिकोण अपनाने के लिए सुधार के सुझाव दें।

मुख्य सीखों का सारांश

- कलंकित न करने वाले व्यवहार का मतलब ऐसा तरीका और भाषा है जो बच्चे का सम्मान बनाए रखे और उसे उसकी परिस्थितियों की वजह से बुरा या गलत ठहराए बिना समझने की कोशिश करे। यह तरीका स्वीकार करने और समझने का माहौल बनाता है।
- बातचीत में ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करें जो बच्चे का सम्मान बनाए रखें। ऐसे शब्दों से बचें जो उसे नकारात्मक रूप से लेबल कर सकते हैं या उसका आत्मविश्वास कम कर सकते हैं। इससे खुलकर बातचीत करने का मौका मिलता है और बच्चा खुद को बेहतर महसूस करता है।
- बच्चे के व्यवहार और स्थिति पर आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का असर हो सकता है। इसे समझने से उसकी बेहतर मदद की जा सकती है। जब बच्चे की आर्थिक स्थिति पर बात करें, तो संवेदनशील भाषा का इस्तेमाल करें ताकि वह शर्मिंदगी या अलगाव महसूस न करे। इससे उसकी इज्जत बनी रहती है और सही मदद मिलती है।
- बच्चे की परिस्थिति पर उसके परिवार और माता–पिता की भूमिका भी असर डालती है। परिवारों से अच्छा संबंध बनाने से बच्चे को बेहतर सहयोग मिल सकता है और उसका भविष्य सुधर सकता है।
- समुदाय की मदद और संसाधन बच्चों के अनुभवों को बेहतर बना सकते हैं। स्थानीय संगठनों के साथ मिलकर काम करने से बच्चों और उनके परिवारों को अच्छी सहायता मिल सकती है।
- बच्चे के दोस्तों और साथियों का उसके व्यवहार पर बड़ा असर पड़ता है। अगर बच्चे के दोस्त अच्छे होंगे, तो वह भी सही फैसले लेगा। इसलिए, अच्छे दोस्त बनाने के लिए प्रेरित करना जरूरी है ताकि बच्चा सकारात्मक विकास कर सके।

सत्र 4

बच्चों के विकास को समझना और उनके व्यवहार परिवर्तन की जरूरतों को पहचानना

सत्र के परिणाम

इस सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- बता सकेंगे कि कैसे बच्चे के विकास के अलग–अलग चरण उसके व्यवहार को प्रभावित करते हैं
- ऐसी परिस्थितियों, माहौल और परवरिश की पहचान कर पाएंगे, जो बच्चे को कमजोर बना सकती हैं।

आवश्यक सामग्री

- चार्ट पेपर, मार्कर, केस स्टडी प्रिंट आउट

पुनर्कथन

- बच्चों के साथ बातचीत करते समय भेदभाव रहित व्यवहार पर पिछले सत्र से प्राप्त मुख्य बातों की संक्षिप्त समीक्षा करें।

अवधि

- 90 मिनट

प्रक्रिया

बाल विकास और संचार की आवश्यकताओं का परिचय

बच्चों और किशोरों के विकास के अलग–अलग चरणों को समझना, खासकर पुलिस की बातचीत में, बहुत जरूरी है। हर उम्र के बच्चे–शिशु, प्रीस्कूलर, स्कूली उम्र के बच्चे और किशोर–अपने खास व्यवहार और संवाद की जरूरतों के साथ आते हैं। अलग–अलग उम्र के बच्चे दुनिया को अलग ढंग से समझते हैं और वयस्कों से अलग तरीके से बात करते हैं, जो उनके सोचने और महसूस करने के तरीके पर निर्भर करता है। जब पुलिस अधिकारी इन अंतर को पहचानते हैं, तो वे अपनी बातचीत के तरीके को बच्चे की उम्र और जरूरतों के अनुसार बदल सकते हैं। इससे न केवल भरोसा और तालमेल बढ़ता है, बल्कि साक्षात्कार, संकट की स्थिति या रोजमर्रा की बातचीत भी ज्यादा असरदार होती है।

चर्चा के बिंदु

प्रमुख विकासात्मक चरणों में शामिल हैं:

- **टॉडलर्स (1–3 वर्ष):** इस उम्र के बच्चे अपने माता–पिता या देखभाल करने वालों से गहरा लगाव महसूस करते हैं और उनके बिना असहज हो सकते हैं। उनकी बोलने की क्षमता सीमित होती है, इसलिए वे अपनी ज़रूरतें बताने के लिए इशारों और छोटे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। अगर पुलिस उनसे बात कर रही हो, तो अधिकारी को आसान और सरल भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए और ऐसा व्यवहार अपनाना चाहिए जिससे बच्चा डरे नहीं। उदाहरण के लिए, बच्चे के स्तर तक झुककर बात करना न केवल उसे सहज महसूस कराएगा बल्कि भरोसा भी बढ़ाएगा।
- **प्रीस्कूलर (3–5 वर्ष):** इस उम्र के बच्चे कल्पनाशील होते हैं और कभी–कभी कल्पना और हकीकत में फर्क करना मुश्किल पाते हैं। वे अपनी भावनाओं को बहुत तेज़ी से व्यक्त कर सकते हैं और खुद को स्वतंत्र महसूस कराना चाहते हैं। वे खेल–खेल में चीजें सीखते हैं और सामाजिक नियमों को समझने लगते हैं। उनकी भाषा समझने की क्षमता बढ़ रही होती है, लेकिन उन्हें छोटे और साफ–साफ बोले गए वाक्य ज्यादा अच्छे से समझ आते हैं। अगर पुलिस को उनसे बात करनी हो, तो चित्र या खिलौनों की मदद से बात करना उनके लिए आसान हो सकता है। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे से कोई जानकारी लेनी हो, तो खिलौनों या तस्वीरों के ज़रिए उसे खुलकर बोलने में मदद की जा सकती है और माहौल को कम डरावना बनाया जा सकता है।
- **स्कूल जाने वाले बच्चे (6–12 वर्ष):** इस उम्र के बच्चों की सोचने की क्षमता बढ़ जाती है और वे नियमों की समझ विकसित करते हैं। उन्हें मान्यता और सम्मान की आवश्यकता होती है। वे ज्यादा स्वतंत्र होते हैं और समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखते हैं। साथ ही, वे अपने दोस्तों की स्वीकृति की भी चाह रखते हैं और अलग–अलग भावनाएँ दिखाते हैं। उनकी शब्दावली में सुधार होता है, जिससे वे जटिल बातचीत कर सकते हैं, और उन्हें सम्मानपूर्वक व्यवहार पसंद आता है। जब पुलिस या अन्य अधिकारी स्कूल जाने वाले बच्चों से बात करें, तो उन्हें चाहिए कि वे बच्चे की भावनाओं को समझें और उसके कामों के बारे में स्पष्टीकरण दें। उदाहरण के लिए, अगर कोई संकट की स्थिति हो, तो बच्चे को विकल्प दें, जैसे: "क्या आप यहाँ बैठना चाहेंगे या वहाँ?" ऐसा करने से बच्चा सशक्त महसूस करता है और उसकी चिंता भी कम होती है।
- **किशोर (13–18 वर्ष):** किशोर स्वतंत्रता चाहते हैं, उनके फैसले दोस्तों से उनके संबंधों से प्रभावित होते हैं, और कभी–कभी जोखिम भरा व्यवहार कर सकते हैं। उन्हें अपनी पहचान व भावनाओं को समझने में अक्सर संघर्ष करना पड़ता हैं। उनके साथ सीधे और सम्मानजनक तरीके से बात करने की जरूरत होती है, जिससे उनकी परिपक्वता को मान्यता मिले। वे अक्सर वयस्कों की बजाय अपने दोस्तों से ज्यादा प्रभावित होते हैं। अधिकारियों को किशोरों से सम्मानपूर्वक बात करनी चाहिए, उनकी बात ध्यान से सुननी चाहिए, और उपदेश देने या हावी होने से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए, अगर किसी किशोर को पुलिस रोके, तो उसे शांत तरीके से रोकने का कारण बताने से स्थिति को बिगड़ने से रोका जा सकता है और आपसी विश्वास बढ़ सकता है।

गतिविधि: परिदृश्य मानचित्रण और व्यवहार विश्लेषण

1. **तैयारी:** सभी प्रतिभागियों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को एक ऐसी स्थिति दी जाएगी, जिसमें एक बच्चा मुश्किल में हो।

स्थिति 1: छोटे बच्चे (1–3 साल)

एक छोटा बच्चा सार्वजनिक शौचालय में अकेला मिला है। वह रो रहा है और अपने माता–पिता को बुला रहा है। बच्चा बहुत घबराया हुआ है और यह नहीं समझ पा रहा कि वह अकेला क्यों है। वह अपने खिलौने को जोर से पकड़कर बैठा है।

चर्चा के बिंदु: पुलिस अधिकारी उस बच्चे को कैसे शांत कर सकते हैं? जब तक माता–पिता या अभिभावक नहीं आते, तब तक बच्चे को शांत रखने के लिए कौन–सी बातचीत करने के तरीके (कम्युनिकेशन टेक्निक) मदद कर सकते हैं?

समूह के लिए आसान सुझाव:

- शांत आवाज़ में बात करें: बच्चे की घबराहट को कम करने के लिए पुलिस को धीरे और प्यार भरी आवाज़ में बात करनी चाहिए।
- बच्चे के स्तर पर आएं: पुलिस वाले को बच्चे के पास बैठने या घुटनों के बल आने की सलाह दें, ताकि बच्चा उन्हें दोस्त की तरह महसूस करे।
- बच्चे की भावनाएँ समझें: बच्चे से कहें, "मुझे पता है कि तुम डर गए हो, पर घबराओ मत। मैं यहाँ तुम्हारी मदद करने के लिए हूँ।" इससे बच्चा सुरक्षित महसूस करेगा।
- खिलौने के बारे में पूछें: अगर बच्चा खिलौने को पकड़कर बैठा है, तो पुलिस वाले प्यार से पूछ सकते हैं, "ये तुम्हारा पसंदीदा खिलौना है? इसका नाम क्या है?" इससे बच्चा थोड़ा सहज महसूस करेगा।
- सुरक्षा का भरोसा दें: बच्चे को आसान शब्दों में समझाएँ कि "तुम सुरक्षित हो, हम तुम्हारे माता–पिता को ढूँढ़ रहे हैं। चिंता मत करो!"

स्थिति 2: प्री–स्कूलर (3–5 वर्ष)

एक छोटा बच्चा खेल के मैदान में अकेला बैठा है। वह खोया हुआ और परेशान लग रहा है। बच्चा बड़ों से सीधे बात करने में हिचकिचा रहा है, लेकिन अगर कोई उसे प्यार से इशारा करे या खिलौना दिखाए, तो वह थोड़ा ध्यान दे सकता है।

चर्चा के बिंदु: बच्चे का विश्वास जीतने के लिए पुलिस किन तकनीकों का उपयोग कर सकती है? वे स्थिति को समझने के लिए बच्चे के साथ प्रभावी ढंग से कैसे संवाद कर सकते हैं?

समूह के लिए आसान सुझाव:

- दोस्ताना इशारे करें: पुलिस अधिकारी को मुस्कुराकर और प्यार भरे हावभाव के साथ बच्चे से बात करनी चाहिए, ताकि बच्चा डरे नहीं।
- खेल–खेल में बात करें: बच्चे से हल्के–फुल्के और मज़ेदार तरीके से बात करें, जैसे "तुम्हें कौन सा खिलौना पसंद है?" या "क्या तुम झूले पर खेलना पसंद करते हो?"
- आसान सवाल पूछें: बच्चे से हाँ/ना में जवाब देने वाले सवाल पूछें, जैसे "क्या तुम यहाँ खेलना चाहते हो?" या "क्या तुमने आज झूला झूला?" ताकि बच्चा बातचीत में आराम महसूस करे।
- धैर्य रखें: बच्चे को बोलने के लिए समय दें और उसे जबरदस्ती बात करने के लिए मजबूर न करें। उसे यह अहसास दिलाएँ कि उसकी भावनाएँ और विचार महत्वपूर्ण हैं।
- सुरक्षित माहौल बनाएं: बच्चे के पास बैठें, ताकि वह सहज महसूस करे, लेकिन बहुत करीब जाकर उसे असहज न करें। इससे बच्चा सुरक्षित महसूस करेगा और धीरे–धीरे खुलकर बात करने लगेगा।

स्थिति 3: स्कूली बच्चा (6–12 साल)

एक बच्चा खो गया है और उसे एक सुनसान इलाके में पाया गया है। वह चुपचाप खड़ा है, ज्यादा बात नहीं कर रहा, और बार–बार नीचे देख रहा है।

चर्चा के बिंदु: बच्चे को अपनी कहानी साझा करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए अधिकारियों को कौन से प्रश्न पूछने चाहिए? वे कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि बातचीत के दौरान बच्चा सुरक्षित महसूस करे?

समूह के लिए सुझाव

- सीधे सवाल पूछें: अधिकारियों को सीधे और खुले तरीके से सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे – "क्या आप मुझे बता सकते हैं कि क्या हुआ?" इससे बच्चे को अपनी बात खुलकर कहने का मौका मिलेगा। सवाल ऐसे न पूछें जिनसे कोई खास जवाब मिलने का संकेत मिले।
- समानुभूति दिखाएँ: बच्चे की भावनाओं को समझें और स्वीकार करें। उसे यह महसूस कराएँ कि उसकी भावनाएँ सही हैं। जैसे – "परेशान होना ठीक है। आप मुझसे बात कर सकते हैं।"
- आश्वस्त करें: बच्चे को यह भरोसा दिलाएँ कि वह अब सुरक्षित है। उसे बताएँ कि अपनी कहानी साझा करना उसकी सुरक्षा के लिए जरूरी है।
- सुखद माहौल बनाएँ: बातचीत के लिए एक शांत और निजी स्थान चुनें, जहाँ कम से कम विकर्षण हों और बच्चा सहज महसूस करे।
- शारीरिक भाषा का ध्यान रखें: अपनी बॉडी लैंग्वेज को ऐसा बनाएँ कि बच्चा डर या असहज महसूस न करे। खुले और सहज हाव–भाव अपनाएँ ताकि बच्चा भरोसे के साथ बात कर सके।

स्थिति 4: किशोर (13–18 वर्ष)

अगर कोई किशोर खतरनाक स्थिति में पाया जाता है और संभवतः अपने साथियों के साथ नशीले पदार्थों का सेवन कर रहा है, तो वह डर या दोस्तों के दबाव से आक्रामक, रक्षात्मक या प्रशासन के खिलाफ विद्रोही व्यवहार कर सकता है।

चर्चा के बिंदु: ऐसी स्थिति में पुलिस को कौन सी रणनीति अपनानी चाहिए? वे कैसे तालमेल बना सकते हैं और किशोर को अपनी चिंताओं को साझा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं?

समूह के लिए सुझाव

- ध्यान से सुनें: अधिकारियों को चाहिए कि वे किशोर की बात को बिना टोके ध्यान से सुनें और उसमें दिलचस्पी दिखाएँ, ताकि वह खुलकर अपनी बात कह सके।
- सम्मान दिखाएँ: किशोर के साथ इज्जत से पेश आएँ और उसकी स्वतंत्रता को स्वीकार करें। इससे उसका विश्वास जीता जा सकता है।
- नरम भाषा का इस्तेमाल करें: कठिन शब्दों या सख्त आधिकारिक भाषा के बजाय, आसान और दोस्ताना भाषा में बात करें ताकि किशोर सहज महसूस करे।
- विकल्प दें: किशोर को चुनाव करने का मौका दें, जैसे – "क्या आप यहाँ बात करना चाहेंगे या किसी और जगह?" इससे उसे नियंत्रण महसूस होगा और उसका रक्षात्मक रवैया कम होगा।
- चिंता जताएँ, न कि फैसला सुनाएँ: सवाल इस तरह पूछें कि वे किशोर की भलाई की चिंता दिखाएँ, न कि उसके व्यवहार पर कोई निर्णय सुनाएँ। इससे वह खुलकर अपनी भावनाएँ साझा कर सकेगा।

2. समूह को यह विश्लेषण करना चाहिए कि बच्चे की उम्र उनके व्यवहार को कैसे प्रभावित करती है और उनके द्वारा दिए गए परिदृश्य के लिए उपयुक्त संवाद रणनीति विकसित करनी चाहिएं।
3. समूह अपने निष्कर्षों का समर्थन करने के लिए अपने व्यवहार विश्लेषण और संवाद रणनीतियाँ प्रस्तुत करें। वे बताएं कि उनका दृष्टिकोण बच्चे की विकासात्मक आवश्यकताओं को कैसे पूरा करता है और इसे वास्तविक जीवन में पुलिस द्वारा कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है।
4. प्रत्येक प्रस्तुति पर चर्चा करें और यह सुझाव दें कि किस प्रकार रणनीतियाँ बच्चे के विकासात्मक चरण के अनुसार उपयुक्त हैं। साथ ही सुधार के लिए सुझाव दें और उनके दृष्टिकोण को और बेहतर बनाने के लिए अतिरिक्त रणनीतियाँ प्रस्तुत करें।

गतिविधि: इंटरैक्टिव क्विज़

1. प्रतिभागियों को दो टीमों में बाँटें।
2. क्विज़ के नियम समझाएँ। प्रत्येक प्रतिभागी बारी–बारी से अपनी टीम के लिए उत्तर देगा। हर सही उत्तर पर टीम को 10 अंक मिलेंगे। गलत उत्तर के लिए कोई नकारात्मक अंक नहीं होगा। अंत में, सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाली टीम विजेता बनेगी।
3. नीचे दिए गए प्रश्नों को एक–एक करके प्रस्तुत करें:

बच्चों के साथ संचार पर प्रश्नोत्तरी

1. आमतौर पर बच्चे किस उम्र में कठिन भाषा संबंधी कौशल विकसित करना शुरू करते हैं, जैसे वाक्य बनाना और सही व्याकरण का उपयोग करना?

A) 1–2 वर्ष B) 3–4 वर्ष
C) 5–6 वर्ष D) 7–8 वर्ष

2. 1 से 3 वर्ष के छोटे बच्चों की संचार से जुड़ी आम ज़रूरत क्या होती है?

A) विस्तृत व्याख्या
B) सरल और शांत भाषा
C) जटिल तर्क–वितर्क
D) अमूर्त अवधारणाएँ

3. 4 से 6 वर्ष के प्री–स्कूलर बच्चों से संवाद करने का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

A) जटिल निर्देश देना
B) कल्पना और खेल को प्रोत्साहित करना
C) विस्तृत समस्या समाधान पर ध्यान देना
D) उच्च स्तरीय चर्चा करना

4. किस विकासात्मक चरण में बच्चे अमूर्त अवधारणाओं को समझने और तार्किक रूप से सोचने की क्षमता विकसित करने लगते हैं?

A) शैशवावस्था (इन्फ़न्सी)
B) प्रारंभिक बचपन (अर्ली चाइल्डहुड)
C) मध्य बचपन (मिडल चाइल्डहुड)
D) किशोरावस्था

5. 13–18 वर्ष के उन किशोरों से बातचीत करने का सबसे सही तरीका क्या है, जो कानून से जुड़ी समस्याओं में उलझे हैं?

A) अधिकार जताने वाली और आदेशात्मक भाषा का उपयोग करें
B) बिना किसी पूर्वाग्रह के, समानुभूतिपूर्ण संवाद करें
C) केवल कानूनी परिणामों पर ध्यान दें
D) स्थिति पर चर्चा करने से बचें

6. जब कोई छोटा बच्चा डरा हुआ हो, तो सबसे उपयुक्त तरीका क्या होगा?

A) उसके डर के बारे में सीधे सवाल पूछना
B) शांत और दिलासा देने वाले स्वर में बात करना
C) घटना के विवरण पर चर्चा करना
D) उसके डर को नज़रअंदाज़ करना ताकि नकारात्मक व्यवहार न बढ़े

7. 7–12 वर्ष के स्कूली बच्चों के साथ संवाद करने की एक महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?

A) उच्च स्तरीय अमूर्त तर्क–वितर्क
B) विस्तृत और संगठित व्याख्या देना
C) भावनात्मक समर्थन और आश्वासन देना
D) भावनात्मक विषयों से बचना

8. प्री–स्कूलर (4–6 वर्ष) के एक सामान्य व्यवहार का कौन सा पहलू संवाद को प्रभावित कर सकता है?

A) विस्तृत वर्णन देने की क्षमता
B) कल्पना और वास्तविकता को मिलाने की प्रवृत्ति
C) उच्च स्तरीय विश्लेषणात्मक सोच
D) लंबा ध्यान केंद्रित करने की क्षमता

9. जब किसी बच्चे ने किसी आघातपूर्ण (ट्रॉमैटिक) घटना को देखा हो, तो बातचीत के दौरान किस चीज़ से बचना चाहिए?

A) खुले–आम सवाल पूछना
B) बिना किसी पूर्वाग्रह के भाषा का उपयोग करना
C) बच्चे को दोषी ठहराना या कोई लेबल देना
D) उसे सहारा और आश्वासन देना

10. किसी किशोर (10–14 वर्ष) से प्रभावी संवाद का सबसे अच्छा तरीका क्या है, यदि वह कानूनी प्रक्रिया को लेकर चिंतित है?

A) सख्त और अनुशासनात्मक स्वर में बात करना
B) स्पष्ट, ईमानदार जानकारी और समर्थन देना
C) कानूनी पहलुओं पर चर्चा करने से बचना
D) केवल बच्चे के व्यवहार पर ध्यान देना

11. सही या गलत: छोटे बच्चों (टॉडलर्स) की जटिल भाषा और अमूर्त (ऐब्स्ट्रैक्ट) अवधारणाओं को समझने की क्षमता सीमित होती है।

उत्तर: सही

12. सही या गलतः स्कूली बच्चे (7–12 वर्ष) आमतौर पर विस्तृत व्याख्या और निर्देशों को समझने में सक्षम होते हैं।
उत्तरः सही

13. सही या गलतः किशोरों से कानूनी मुद्दों पर बात करते समय जटिल कानूनी शब्दावली का उपयोग करना उचित होता है।
उत्तरः गलत

14. सही या गलतः बच्चों के लिए "शरारती बच्चा" या "बुरा बच्चा" जैसे लेबल का उपयोग करना उन्हें कलंकित नहीं करता।
उत्तरः गलत

15. सही या गलतः प्री–स्कूलर (4–6 वर्ष) के साथ संवाद में उनकी कल्पना को शामिल करना और जटिल अवधारणाओं को सरल बनाना ज़रूरी होता है।
उत्तरः सही

16. सही या गलतः गैर–कलंकित व्यवहार में समानुभूति दिखाना और आलोचनात्मक भाषा से बचना शामिल होता है।
उत्तरः सही

17. सही या गलतः बच्चों के साथ बातचीत करते समय गोपनीयता बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है ताकि वे और अधिक कलंकित न हों।
उत्तरः सही

18. सही या गलतः किशोर उन बातों पर बेहतर फीडबैक देते हैं जो उनकी स्वतंत्रता की जरूरत को स्वीकार करती हैं।
उत्तरः सही

19. सही या गलतः छोटे बच्चों से संवाद करते समय, त्वरित फीडबैक पाने के लिए निर्देश देने वाला तरीका अपनाना जरूरी होता है।
उत्तरः गलत

20. सही या गलतः समानुभूति से सुनना बच्चे के नजरिए को समझने और प्रभावी संवाद सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।
उत्तरः सही

4. सही उत्तरों की समीक्षा करें, उनके पीछे का तर्क स्पष्ट करें, और आम गलतफहमियों को दूर करें।
5. प्रतिभागियों को क्विज़ पर विचार करने, नई सीख साझा करने, और कवर की गई सामग्री से संबंधित किसी भी प्रश्न को पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

मुख्य सीखों का सारांश

- **विकासात्मक जागरूकताः** सामान्य विकासात्मक चरणों को समझना – छोटे बच्चे, प्री–स्कूलर, स्कूल जाने वाले बच्चे और किशोर – उनकी विशेष संचार आवश्यकताओं और व्यवहार संबंधी विशेषताओं को पहचानने के लिए जरूरी है।
- **छोटे बच्चे (1–3 वर्ष):** परेशान बच्चों को शांत करने के लिए सरल भाषा और कोमल स्वर का उपयोग करें। उनके स्तर पर झुक कर बात करने से वे कम डरे हुए महसूस करेंगे और अधिक सुरक्षित महसूस कर सकेंगे।
- **प्री–स्कूलर (3–5 वर्ष):** छोटे बच्चों का विश्वास जीतने के लिए मज़ेदार भाषा और दोस्ताना हाव–भाव अपनाएँ। बातचीत को आसान और कम डराने वाला बनाने के लिए खिलौनों या चित्रों जैसी दृश्य सामग्री का उपयोग करें।
- **स्कूल जाने वाले बच्चे (6–12 वर्ष):** उनकी भावनाओं को समझें और उन्हें भरोसा दिलाएँ। उन्हें अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें और बातचीत के दौरान सुरक्षित महसूस कराने के लिए खुलकर सवाल पूछें।

- **किशोर (13–18 वर्ष):** किशोरों से आदर से बात करें और उनकी समस्याओं को ध्यान से सुनें। खुले संवाद को बढ़ावा देने और रक्षात्मक रवैया कम करने के लिए आलोचना से बचें और समझदारी से बात करें।
- **आयु–उपयुक्त संचार:** विकास के हर चरण के हिसाब से संवाद की रणनीतियाँ बनाना ज्यादा प्रभावी होता है। उदाहरण के लिए, बच्चों के साथ सरल भाषा का प्रयोग करना और प्री–स्कूल बच्चों के साथ कल्पनाशील खेल खेलना समझ बढ़ाने में मदद करता है।
- **व्यवहार पर प्रभाव:** बच्चे अपनी उम्र के अनुसार चीजों को समझते हैं और बड़ों से बात करते हैं। इसलिए, उन्हें अपनी बात कहने और सहयोग करने में मदद करने के लिए अलग–अलग तरीके अपनाने की जरूरत होती है।

अनुलग्नक 1: कलंकित करने वाले शब्द और उनके कलंकित न करने वाले विकल्प

कलंकित शब्द	कलंकित न करने वाले विकल्प
अपराधी (Delinquent)	कानून से संघर्ष कर रहा बच्चा
परेशानी पैदा करने वाला (Troublemaker)	चुनौतीपूर्ण व्यवहार दिखाने वाला बच्चा
पीड़ित (Victim)	कठिनाइयों का सामना कर चुका बच्चा
जोखिम में (At risk)	संभावित कमजोरियों वाला बच्चा
अजीब (Freak)	विशेष जरूरतों या व्यवहार वाला बच्चा
समस्या वाला बच्चा (Problem child)	अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता वाला बच्चा
बुरा प्रभाव (Bad influence)	अलग दृष्टिकोण रखने वाला बच्चा
अपराधी (Criminal)	गैर–कानूनी गतिविधियों में शामिल युवा
अनुशासनहीन (Unruly)	संकट या व्यवधान के संकेत दिखाने वाला बच्चा
स्कूल छोड़ने वाला (School dropout)	अस्थायी रूप से स्कूल छोड़ चुका बच्चा
चिल्लाने वाला (Screaming)	अपनी भावनाएं या निराशा व्यक्त करने वाला बच्चा
अजीब (Weird)	विविध रुचियों या विशेषताओं वाला बच्चा
बेकार (Lost cause)	सकारात्मक बदलाव की संभावना रखने वाला बच्चा
झूठा (Liar)	अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में संघर्ष कर रहा बच्चा
कठिन (Difficult)	खुद को अभिव्यक्त करने में चुनौती का सामना कर रहा बच्चा
आज्ञा न मानने वाला (Disobedient)	अपनी स्वतंत्रता दिखाने वाला बच्चा
लापरवाह माता–पिता (Neglectful parents)	समर्थन देने में कठिनाइयों का सामना कर रहे माता–पिता
अधिक नियंत्रित करने वाले माता–पिता (Overbearing parents)	अपने बच्चे के जीवन में अधिक सक्रिय माता–पिता
गरीब (Poor)	निम्न आय वाले परिवार से आने वाला बच्चा
अशिक्षित (Uneducated)	सीमित शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच वाला बच्चा
अलग–थलग (Disconnected)	समुदाय से जुड़ने में कठिनाइयों का सामना कर रहा बच्चा
सख्ती से कार्रवाई (Crackdown)	सामुदायिक सहायता उपायों का कार्यान्वयन
किशोर अपराधी (Juvenile delinquent)	कानून से संघर्ष कर रहा बच्चा
निर्दोष पीड़ित (Innocent victim)	परिस्थितियों से प्रभावित बच्चा
परित्यक्त (Abandoned)	देखभाल करने वालों से अलग हुआ बच्चा
नशेड़ी (Drug addict)	नशे की लत से जूझ रहा युवा
वंचित (Underprivileged)	सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा बच्चा
बदमाशी करने वाला (Bully)	चुनौतियों के कारण आक्रामक व्यवहार दिखाने वाला बच्चा
सामाजिक रूप से अजीब (Socially awkward)	जिसे सामाजिक कौशल में मदद की आवश्यकता हो सकती है
"इस बच्चे के माता–पिता बुरे हैं।"	"इस बच्चे को अतिरिक्त पारिवारिक समर्थन की आवश्यकता हो सकती है।"

"यह बच्चा टूटी हुई फैमिली से आता है।"	"यह बच्चा एक चुनौतीपूर्ण पारिवारिक स्थिति से गुजर रहा है।"
"इस बच्चे के दोस्त उस पर बुरा प्रभाव डाल रहे हैं।"	"साथियों के संबंध इस बच्चे के चुनावों को प्रभावित कर सकते हैं।"
"यह परिवार गैर–जिम्मेदार है।"	"यह परिवार ऐसी कठिनाइयों का सामना कर रहा है जो उनके समर्थन देने की क्षमता को प्रभावित कर रही हैं।"
"समुदाय इन बच्चों की परवाह नहीं करता।"	"इन बच्चों के लिए सामुदायिक समर्थन को मजबूत करने के अवसर हो सकते हैं।"
"यह बच्चा अपने माता–पिता के कारण मुसीबत में पड़ जाएगा।"	"इस बच्चे को मार्गदर्शन और सलाह की आवश्यकता हो सकती है।"
"इस क्षेत्र के सभी बच्चे अपराधी हैं।"	"इस क्षेत्र के बच्चों को अनोखी चुनौतियाँ और अवसर मिलते हैं।"
"एकल माँ समाज पर बोझ है।"	"एकल माँ अपने बच्चे का समर्थन करने की पूरी कोशिश कर रही है।"
"यह बच्चा हमेशा मुसीबत में पड़ता रहता है।"	"यह बच्चा कुछ चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है।"
"इन बच्चों का जीवन असफलता में ही खत्म होगा।"	"इन बच्चों में सही समर्थन के साथ सफलता पाने की पूरी क्षमता है।"
"यह बच्चा बस एक गरीब परिवार से आता है।"	"यह बच्चा निम्न आय वर्ग से है और इसे समान अवसर मिलने चाहिए।"
"इस बच्चे की उपेक्षा की गई है।"	"यह बच्चा ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहा है जो उसके समर्थन को सीमित कर सकती हैं।"
"यह परिवार शिक्षा की परवाह नहीं करता।"	"यह परिवार संभवतः शैक्षिक संसाधनों तक पहुँचने में संघर्ष कर रहा है।"
"यह बच्चा अपने दोस्तों पर बुरा प्रभाव डालता है।"	"इसका नजरिया उसके दोस्तों को प्रभावित कर सकता है।"
"ये बच्चे सिर्फ अपने माहौल की उपज हैं।"	"ये बच्चे अपने अनुभवों से प्रभावित होते हैं और उन्हें सफल होने के लिए समर्थन की जरूरत है।"

अनुलग्नक 2: फैसिलिटेटर हेतु चेकलिस्ट

सत्र से पहले की तैयारी

लेख की समीक्षा करें

हर उम्र के बच्चों के विकास और संवाद के तरीकों को समझें।

सामग्री तैयार करें:

- सभी स्थितियों, चर्चा बिंदुओं और प्रश्नोत्तरी को सही तरीके से क्रम में रखें।
- प्रस्तुति के लिए ज़रूरी चित्र, वीडियो या अन्य सामग्री तैयार रखें।

माहौल तैयार करें:

- बातचीत और भागीदारी बढ़ाने के लिए बैठने की व्यवस्था गोल या छोटे समूहों में करें।
- ऐसा माहौल बनाएं जहाँ लोग आराम से और खुलकर बात कर सकें।

सत्र के दौरान

परिचय

सत्र के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से समझाएँ।

- बच्चों के विकास और प्रभावी संचार के महत्व को रेखांकित करें।

चर्चा को प्रोत्साहित करें

- खुले प्रश्न पूछकर सक्रिय सहभागिता को बढ़ावा दें।
- यह सुनिश्चित करें कि सभी आयु समूहों पर चर्चा हो और प्रतिभागी विकासात्मक विशेषताओं को समझें।

परिदृश्य आधारित गतिविधियाँ

- गतिविधियों के निर्देश स्पष्ट रूप से समझाएँ।
- समूह चर्चा की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन दें।

प्रस्तुतीकरण

- प्रतिभागियों को अपनी रणनीतियाँ प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।
- प्रत्येक प्रस्तुति के बाद उनकी रणनीतियों की प्रभावशीलता पर चर्चा करें।

इंटरेक्टिव क्विज़

क्विज़ के निर्देश:

- प्रारूप और स्कोरिंग प्रणाली को स्पष्ट रूप से समझाएँ।
- सभी टीमों को समान अवसर दें।

उत्तर समीक्षा:

- प्रत्येक प्रश्न पर चर्चा करें और सही उत्तर के पीछे का कारण समझाएँ।

सत्र के समापन पर

मुख्य सीख को संक्षेप में प्रस्तुत करें

प्रत्येक आयु वर्ग के लिए प्रमुख निष्कर्ष और उनकी संचार आवश्यकताओं पर ज़ोर दें।

चिंतन हेतु प्रोत्साहित करें

प्रतिभागियों से उनके अनुभव और सवालों को साझा करने के लिए कहें।

फीडबैक प्राप्त करें

भविष्य के सत्रों को बेहतर बनाने के लिए फीडबैक एकत्र करें।

अतिरिक्त सुझाव

- सक्रिय बने रहें: पूरे सत्र में सकारात्मक और प्रेरणादायक माहौल बनाए रखें।
- लचीलापन अपनाएँ: प्रतिभागियों की ज़रूरतों और उनकी सहभागिता के अनुसार सत्र को समायोजित करने के लिए तैयार रहें।
- समावेशिता को बढ़ावा दें: चर्चा के दौरान सभी की राय को महत्व दें और सम्मानपूर्वक सुनें।